

भास्कर प्रकाश



संपादक

स्वामी श्री आफताब जी

कारिहामा निवासी (कश्मीर)



Publisher:-

Hari Krishen Kaul
S/o Shri Kashi Nath Kaul
Bagh Jogi-Lanker Rainawari, Srinagar.

First Eddition 1000

धर्मार्थ्य वितरण



प्राककथन

कश्मीर अपने प्राकृतिक दृश्यों, जलवायु तथा निजी स्थानीय विशेषताओं के कारण भूस्वर्ग की पदवी पर आसीन है। इतना ही नहीं, अपितु इस पुण्य भूमि ने अच्छे अच्छे सूफियों, सिद्ध दार्शनिकों अद्वितीय विद्वानों, उच्चकोटि के कवियों तथा प्रतिभाशाली आचार्यों को जन्म दिया है। क्योंकि संसार नाशशील है अतः जिन महापुरुषों के चरित्र आज तक लिपि बद्ध किये गये हैं उनका जीता जागता चित्र हमारी आखों के सामने इस समय भी फिर रहा है। उनकी मधुर वाणी से हम आज भी उसी प्रकार आप्लावित हो रहे हैं जिस प्रकार उनके समसामयिक आनन्द की मस्ती से झूम उठते थे।

यहाँ पर उन आदरणीय महानुभावों में से मैं विशेषतया एक का वर्णन कर रहा हूँ। आप का शुभ नाम उत्तम स्वरूप स्वामी आफताब जी है। आप का जन्म १२ भाद्रपद १९३९ वि० तदनुसार 3 अगस्त १८८३ ई० शनिवार को २बजे ५०मि० कारेहामा में हुआ तथा आपका शिवलोक गमन ५ माघ २०१६वि० तदनुसार २८ जनवरी १९६० ई० ९बजे ४५ मि० सोमवार को हुआ। शैशव काल से ही आप में ऐसे

लक्षण प्रतीत होते थे जिन से आपके अन्तर की विद्यमान किसी आध्यात्मिक शक्ति का भाण होता था। आप के गुरुवर्य ने इन्हीं कारणों से एवं आपके सहज-ज्ञान के कारण ही आपको "भास्कर" के नाम से पुकारना उचित समझा। चूंकि भास्कर (सूर्य) के प्रकाश से समस्त जगत का अन्धकार क्षणों में मिट जाता है। अतः उक्त महानुभाव के रचना-संग्रह का नाम भी मैंने "भास्कर प्रकाश" रखना ही उचित समझा।

अपनी ओर से मैंने आपके काव्यामृत को क्रम-करने का पूर्ण प्रयत्न किया।

आशा है कि सहृदय-जन आपके काव्य में अद्वैतवाद, अखण्ड ब्रह्मवाद, काव्य सूक्तियों के वैचित्र्य, चमत्कार को उत्पन्न करने वाली उपमाओं एवं अन्य अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग का स्वयं ही अनुभव करेंगे और अवश्य ही उनसे प्रभावित भी होंगे।

आपकी रचनाओं का कुछ भाग अभी तक हस्त-गत नहीं हो सका है। यदि दैव ने चाहा तो अगले-प्रकाशन में प्रकाशित करने का प्रयत्न करूँगा॥

—हरिकृष्ण कौल

ॐ

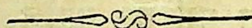
ओं श्रीगणेशाय नमः ॥

भजन नम्बर १

गुडन्य तस आदि देवस कर नमस्कार ।
विनायक सिद्धि दाता विघ्न हरतार ॥
छु गणपत सारिकुय सर्राज वोनमुत ।
छु गणपत सारिकुय महाराज वोनमुत ॥
क्रि कर्मन सारिनय पूज़ा तसन्ज़ आद ।
क्रि धर्मन सारिनय व्याधि करान बाद ॥
करिथ आरम्भ म्योरन इम नित्य तसुन्द नाव ।
गछ़्यक सिद्ध कामना विघ्नुक छु अभाव ॥
सु प्रिय वर दियि सुन्द गज़मोख तरन तार ।
इछ़ा सन्तान सती हुन्द छु मोखतार ॥
सु सरदार देवनय हुन्द सरकार मानुन ।
ब दरबार तस छु सत्कार पार जानुन ॥
विनायक छु सु नायक नित्य सहायक ।
सु वरदायक तोतः करनस लायक ॥

Ragh Nath Kastoor
Balabora ...

सती सत माजि हन्दि पास कर म्य दासस ।
करित वास आस भास व्यसजुन विकासस ॥
चतुर दल द्वार मूलाधार कुय ध्यान ।
त्रिपुर वेलंगित छु चूरिम तीत राज़ान ॥
तवै ननि नोन भास्कर प्रान पान वोलसान ।
नित्य आनन्द मय निर्द्वन्द शोभान ॥

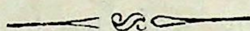


भजन नम्बर २

ओंकार आधार हे उमा पुत्र ।
हे लम्भोदर धर चोनय ध्यान ॥
प्रेप सोरः सोरहत हे विद्यादर ।
गज मुख सन्मुख दर्शन म्य हात ।
हर मुख सुख मुख वनि इत मन सर ॥ हे ल०
मूलाधार लोल आम योगेन्दर ।
चतुर दल वुलसित विराजमान ।
प्राण अपाण अर्ग़ बर्ग़ पूज़ चान कर ॥ हे ल० ॥
नायक विनायक छुक सहायक गुरु ।

चतुर भुज़ चोर आयुध चमकान ।
धर्म अर्थ काम कामकि मूल दातर ॥ हे ल० ॥
उमा नन्दन क्षमा सागर ।
रुम रुम रुमन छुचम च़ुानी कल ।
रुमा रूज़ित बोज़तम आर्चर ॥ हे ल० ॥
यज्ञन भक्त विघ्नहार गगन पीताम्बर ।
मग्न आनन्द स़न्दि वन्द ह़ाय पान ।
च़ित विमर्श दीप्ति मान कोटि सूर्य चन्दर ॥ हे ल० ॥
भक्ति रक्त शक्ति प्रिय हे वल्लभादर ।
मोक्ष दात रक्त वर्ण छुक च़ त्रिनयन ।
प़ोख़तकार मुख़तार मुक्त बनि मुखतसर ॥ हे ल० ॥
एक दन्त वक्र तुन्ड हे सिद्धि दातर ।
दीर्घ मोर मुकट शोभायमान ।
मूषक वाहन योनि नागेन्दर ॥ हें ल० ॥
लाल माल ऩाल छ़ुय हे बाल चन्द्र ।
माल करहै इत साल छुय सोन ।
शिव नाथ स़ान्द टाठि हे इछापुत्र ॥ हें ल० ॥
आदि देव व्याधि कास भास न्यबऱ अन्दऱ ।

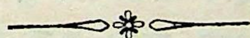
सत सती माजि हन्दि पास कर म्य पास ।
मननिवास आस भास नोन भास्कर ॥ हें ल० ॥



भजन नम्भर २

आदि देव कारण व्याधि निवारो ।
सिद्धि दातारो बुविनय जय ॥
एक दन्त वक्र तुन्ड़ सर्व आधिकारो ।
गज मुख दारो अज़ अभय ।
उमा नन्दन गण सरदारो ॥ द्धि० ॥
चतुर दल बल वीर मूलाधारो ।
नित्य पहरदारो ह्यत वर अभय ।
अस्त्र शस्त्र ज़ोरा वारो ॥ मि० ॥
मन्त्र नायक सहायक उधारो ।
कर परम पारो विनायक सिद्धय ।
हे वरदायक बड़ि सरकारो ॥ सि० ॥
कृष्ण पिन्गल धूमर वर्ण शशि शिखारो ।
नागेन्द्र धारो छुक परम परय ।

बाल चन्द्र लाल माल नील मुक्तहारो ॥ सि० ॥
त्रिकूट वर्ण सूर्य चन्द्र तारो ।
त्रिनेत्र धारो स्वर्णमय ।
विघ्न राज यज्ञ देव गगन आधारो ॥ सि० ॥
माजि हन्दि राज़ ज़ाद हा ताजदारो ।
ईश्वर प्यारो हे गणेश्वरय ।
रक्त वर्ण शक्ति प्रिय भक्ति सहारो ॥ सि० ॥
पास कर भास नोन कास अन्धकारो ।
कर हितकारो दासन जय ।
साम भास्कर छुय तोतः कारो ॥ सि० ॥

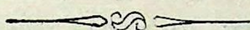


भजन नम्बर ४

अन्धकारकि इन्दु शिव शान्त सत् गुरु ।
परापर परम धाम राम राम परयो ॥
आदि देव गोविन्द नाद बिन्द अक्षर ।
निर्द्वन्द निष्काम राम राम परयो ॥
दयि अद्वय दयि दयायि किन चाव ।

प्रेम मस की जाम राम राम परयो
तमि मस रस रस लगहय नावस ।
हावस सुबह शाम राम राम परयो ॥
इन्दु रव वोन्दि भास अज्ञान घट कास ।
भास मन्ज़ खास व आम राम राम परयो ॥
श्याम रंग भोम्बरो गूँ गूँ चानि स्यूत !
ही तनि चुज्यम हाम राम राम परयो ॥
अनुग्रह पूर कर संकट दूर कर ।
चलनम लोक पाम राम राम परयो ॥
शक्ति पात स्वत्यन मुक्त दात सान्य खेत ॥
पापनाव हचि त हाम राम राम परयो ।
मुरली वायवनि अंनहत बाजि बेज़ ।
दर्द सोज़ स्वर साम राम राम परयो ॥
आम्य ज़ाम्य दुध प्याल भर्य भर्य थावय ।
च्यखना दाम दाम राम राम परयो ॥
सुधाम दाम चाव सहस्र दल प्रावनाव ।
भक्ति हन्दि प्रणायाम राम राम परयो ॥
कर गन्डिथ वर तल छुस ब दिम् वरदान ।
धर्म अर्थ मोच्च काम राम राम परयो ॥

अज्ञान घट कास भास्कर नोन भास।
अजपा प्राणायाम राम शम परयो ॥



भजन नम्बर ५

ह्यस के आगर मस के सागर।
हे सत् गुरु रस रस मस म्य चाव ॥
ह्यस कुय ह्यस दिम मस कुय मस दिम।
मस्तान तमि मस ह्यस व्याव ॥
अन्द्रिमि तुन्द्रय प्राण तावनावित।
चन्द्रम मण्डल अमृत चाव ॥
दम दम ओम् कुय पन खारनावित।
इन्द्राज़स म्य निन्द्रि वुज़नाव ॥
हमस द्वार मान्सर वार फोलनावित।
सहस्र दल डल योग गत श्रावनाव ॥
कन्धापोरय शशि त रव सात्रित।
शित्र गाशि केशव शिव वुछनाव ॥
नव वुय द्वारन दाह मिलनावित।

द्वाद शान्त मण्डल काह मुकुनाव ॥
गगनस हेरि शेरि प्राण फेरिनावित ।
ज़ीर बम सीर नाद बिन्द वुज़नाव ॥
शाह परवय सूत्र पान वुफनावित ।
छि़पि छ़ारि सोहम पान प्रज़नाव ॥
ज्याति विभूति नन्य प्रावनावित ।
आप्त काम प्राप्त म्यति कानाव ॥
आकाश पाताल छाल फेरनावित ।
ज़ेरि ज़ेरि हेरि ब्रोन ईक बनाव ॥
दिक् पाल नव ग्रह दास भाव प्रावित ।
सास भास्कर ननि नोन भासनाव ॥



भजन नम्बर ६

श्याम् कामकि सुन्दर श्याम् राम् निष्काम् श्रीधरै ।
करुणाकर दुरिताहर् वरदायक सत् गुरै ॥
नन्द नन्दन बन्धन कास्तम् त् निर्बन्धन निर्भरै ।
नर वासन् गरुडासन् शेष शयन् ईश्वरै ॥

देश व्यापक हे विश्वम्भर् वर दायक सत् गुरे।
भक्त रछ हे शक्तीश्वर मुक्त मुक्त कर मुखतसरे।
हे पुखत् कार पार है च्यै मुखतहार भक्तयन तार भवसरे।
चानि बरतल त्रात्रित छुस ब लर वर दायक सत गुरे॥
आदि अन्त् रसति नाद् बिन्दु ओंकार् इन्द् रव सन्दि सुन्दरे।
देह् मन्दिर पूज़हत भोगेन्द्र योगेन्द्र ब्रह्म रन्ध्रे।
दशम द्वार् तर् द्वादशान्त अन्तर् वर दायक सत् गुरे।
देव ब्रह्मा गन्धरव कारण ध्यान धारनायि ततरे।
सूर्य चन्द्रम् आकाश तारा अनुशासन् प्रकरे।
दप भय् चोन मानित सुरासुर वर दायक सतगुरे॥
गत चान नित्य अपारन्गित दज़वन सति शाह परे।
बत वीर ईरः धीर छुनः वीरन सीर कुस वनि निवरे।
कुति काग डेशिहान आश्चर्य् वर दायक सत् गुरे।
धर् कर ध्यान मनकुय अगोचर् वनि वाणी सु वनि विस्मरे।
लव त् छाय बुज़ तार कोर पोशान वुछहन बाह्य नेत्रे।
ज्ञान दृष्टि दिन पान् च्यै हरेहर् वरदायक सत् गुरे॥
निष्कारण चाय सर्व कारण त्रियि कारण अन्तरे।
दश अवतार दारिव चय हिश रस्ति निश् मास निवर् अन्दरे।

साम भास्कर् भामवुन छु वास्वर् वरद यक सत् गुरै ॥

———

भजन नम्बर ७

योगेन्द्र गौरी शङ्कर् गिरिश्वर ।
श्री सत् गुरु हर् बुविनय जय ॥
चान्यन चरनन् हुन्दुय छु आसर् ।
व्याध कास अन्तः करणन् भास ।
शरणागत वत्सल् परमेश्वर् ।
श्री सत् गुरु हर् बुविनय जय ॥
स्थूल् सूक्ष्म् कारण सान्य निबर् अन्दर् ।
चर् चर भाव् किन छुक चु पूर्ण ।
चर चन त अर्चन चय छुक परात्पर् हर् ।
श्री सत् गुरु हर् बुविनय जय ॥
अविद्या गालवुन छुक चु विद्याधर ।
सिद्धि दातर् गुरु चय सर्व शक्तिमान् ।
प्राण अपान् अगँ भगँ पूज़ चानि कर ।
श्री सत् गुरु हर् बुविनय जय ॥

चन्द्र चूड नागेन्द्रहार गिरिजाधर ।
त्रिनेत्र धारवनि वृषभवाहन ।
जटा मुकट ह्यत शशि शेखर ।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय ॥
उंद रूत भस्माधर शीत सुन्दर ।
शंख शूल पद्म हस्त वरद अभय ।
गज चर्म हे रम्भ वस्त्र दिगम्भर ।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय ॥
कारण त देव गण तोतनस त्रिअत्तर ।
धारवनि सिद्ध नित्य चोनय ध्यान ।
तार वुन करनावि तार भवसागर ।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय ॥
घटि मन्ज़ प्रज़लान छुक च सास भास्कर ।
आश तोश छुट छाय कास भास नोन ।
धर्म अर्थ काम दायक मोत्त दातर ।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय ॥



भजन नम्बर ८

चन्द्र चूड शीखर सुन्दर गंडाधर ।
शंकर सु सर्व शक्तिमान वरि म्य ॥
आश तोश नाश रस्ति शान्त वेद सागर ।
भ्रान्त भ्रम कासवुन त्रिजगत नाथ ।
कैलास वास एकांत गिरिजाधर ।
शंकर सु सर्व शक्तिमान वरि म्य ॥
सुर नूर मरिथय सुय परात्पर हर ।
शक्तिपात भक्तियन करान अनुग्रह ।
त्रिनयन मनन शील नगि नगन दिगम्भर ॥ श० ॥
शिव शशि प्रव रव आव अन्द्र निबर ।
नाव नव नव द्वार तर बहिम द्वार ।
दशम द्वार तार दियि द्वादशान्त अन्तर ॥ श० ॥
ओं भू र्भुवः योगेश्वर सु गुरु वर ।
आप्त काम व्यापक सु शिव निर्वाण ।
अष्ट सिद्धि दातर इष्ट देव दुष्ट हर ॥ श० ॥
प्राण अपान, अर्ग भर्ग पूज़ तस कर ।
गोड मान्सर वीप दजि अहंकार ।
ज्योति विभूति हर मुख ब्रह्म सर ॥ श० ॥

सत ऋषि तु कारण सिद्ध बियि गन्धरव।
शशि तु रव निशिदिन धरवन्य छि ध्यान।
ऋद्धि त सिद्धि दिवान सु सिद्धि दातर॥ श०॥
आधीन तुमि सुय यि संसार चक्र।
तुमि सन्दि शासन जगत वर्त्तान्।
कैलास वास भासमान सास भास्कर॥ श०॥



भजन नम्बर ९

अर्ध नारीश्वर गौरी शंकर
वरदायक गिरि धारी।
सुर नायक विनायक इच्छा पुत्र-
दर्शन सर्व प्रकारी।
मातानुग्रह शक्ति पात प्रसीद॥
देश काल व्यापक हिशरास्ति ईश्वर-
हे पशु पति विश्वधारी।
शेष शायन अर्चित शशि शीखर-
त्रिशि भास वृषभ सवारी॥ मातानुग्रह॥

त्रिधाम त्रिनयन त्रिपुरान्तक हर-
त्रिगुण पुर त्रिपुरारी ।
त्रनवय कारण तोतनस चे त्रिअक्षर-
तुर्यातीत सर्व न्यारी ॥ मोता० ॥
दय अद्वय दय गछतम चु प्रियवर-
कर दय दय भय हारी ।
दयायि चानि जय बनि निरन्तर-
हे दय सर्व उपकारी ॥ मा० ॥
सन्मुख भासतं हे गङ्गाधर-
सुख मुख वर दुख हारी ।
हर मुख नोन चय सुर ब्रह्मसर-
गुर मुख ज़ान हंसद्वारी ॥ मा० ॥
पूर्ण परुषोत्तम परमेश्वर-
प्रियवर प्रीतम प्यारी ।
प्रत्येक परमात्म भात्पर हर-
परमानन्द हितकारी ॥ मा० ॥
इष्ट देव काशी काश्मर-
दुष्ट नष्ट कर कष्टवारी ।
सन्तुष्ट बन स्पष्ट चय इष्ट दातर-

सर्व जेष्ट श्रेष्ठ अधिकारी ॥ मा० ॥
आदन सूर योन्य नाद बिन्द अक्षर-
साधन चय रक्षाकारी।
पादन चेय लगहोय आदि कोठि भास्कर-
तत सत् चित् सुफारी ॥ मा० ॥

भजन नम्बर १०

दय ध्यानि अक्षय हे मृतञ्जय
भय कास भास नोन चोपारी
शरणागत चरनन आसय् ब अद्वय्
भय कास भास नोन चोपारी
नेत्रन वथरय् प्रेम निर्णय नय्
मित्रन हन्ज थव सरदारी
पाशपत अस्त्र शत्रुन करत क्षय
भय कास भास नोन चोपारी
धर्म सहकारी सारी चोपारी
अमृत चाबुक व सारी कास

मरमर चलि युथ सांपनन निर्भय ॥ भय० ॥
नारस ति गुलजार बनि युथ च्रण् च्रण् ।
दिन् दिन् बसन्त बहारी ।
ननि नोन अनुग्रह कर युथ बनि जय ॥ भय० ॥
कालुक काल छुक दुष्ट छिय गालन ।
पालुन श्रेष्टन हुन्द समबन्ध ।
दिक् पाल राछ् हयथ छुक वर्दाभय ॥ भय० ॥
सुख् मुख दुख् कास भास नोन हरमुख् ।
गुरु मुख चइ छुक सहारी ।
सन्मुख चय भास्कर सास आनन्दइ ॥ भय० ॥

भजन नम्बर ११

बन्दे मैं तेरे चरणों,
नन्देश ईश सरदार ।
आनन्द दातु शरणों,
बन्धनों से करत छुटकार ॥
बन्दे मैं तेरे चरणों ॥

तू मालिके ज़मान् हो,
तू खालिके जहान् हो।
व्यापक तू लामकान् हो,
प्राण हो सर्व जानदार ॥ वन्दे० ॥
शक्तेश शक्ति सम्पन्न,
भक्तेश भक्ति रञ्जन।
मुक्तेश मुक्त कारण,
दाता त पोखत मुखतार ॥ वन्दे० ॥
नाना रूप धारी,
भक्तों का हितकारी।
शासन अधिकारी,।
कश्मीर राज दरबार ॥ वन्दे० ॥
यज्ञेश विघ्न हरता।
सृष्टि स्थित लय करता।
भक्तों का तू भर्ता।
धरता अनेक अवतार ॥ वन्दे० ॥
विनती सुनो महाराज।
राखो सदा तू मेरी लाज।
स्थित करो धर्म राज।

सर्ताज बस यह उपकार ॥ वन्दे० ॥
सुख रूप सुख दिखाओ।
हर सुख दुख मिटाओ।
गुरु सुख विधि सिखाओ।
सन्मुख बनो सदाकार ॥ वन्दे० ॥
कोटि भास्कर चमत्कार।
सर्वज्ञ सर्वाधार।
सत रूप सत आकार।
निर्गुण ब्ययि निराकार ॥ वन्दे ॥



भजन नम्बर १२

योग धारणायि प्राण सन्धोरुम।
ध्यान धोरुम शिव शम्भू ॥
शिव रागुक भस्म तनि पारुम।
ज़ागि ज़ोगुम करित वैराग।
भाव़ नाग़ राद़ प्रेन पोन्य फयोरुम ॥ ध्यान० ॥
देह अभिमान गयव ज़न कोरुम।

अहंकार ज़ोलुम रत्न द्वीप ।
मुह अन्धकार् घटि गाश होरुम ॥ ध्यान० ॥
अनहत् तारि स्वर यलि चोरुम ।
ज़ीर भम द्राव नाद् बिन्द साज़ ।
इन्द् रय वुन्दि अमृत होरुम ॥ ध्यान० ॥
नित्य अनित्य तोस् ब्युन चोरुम ।
रुम् रुम् सुय ओस रमान ।
ओं कुय पन दम् दम् खोरुम ॥ ध्यान० ॥
शून्यहुक विनाह शिव विस्तोरुम ।
वुछ़ोरुम छण छण ती ।
काम क्रोध लोभ मुह मद मोरुम ॥ ध्यान० ॥
वल प्यट सुय मूल वुछ़ोरुम ।
होस्त मस वाल् करुम बन्द ।
मूलाधार द्वादशान्त तोरुम ॥ ध्यान ॥
गाट् ज्ञावित सुय गाट् जोरुम ।
दय यस दियि तस च़लि ग्राव ।
शिव मालिनि शिव हंस् दोरुम ॥ ध्यान० ॥
सुबह् शामन सु प्रभात गोरुम ।
छ़ोरम मन्ज़ आस्: खासन ॥ ध्यान० ॥

सास भास्कर पान विचोरुन ॥ ध्यान० ॥

—————

भजन नम्बर १३

हे नाथ अनाथनुय दया कर।
हे नाथ रमा पति क्षमा कर॥
दुस्तर महान भव सागर।
दिम तार बनाव तन गोखोर।
रुम् रुम् रमान च़ बाह्य अन्तर।
रुमा चु रोज़ बोज तु आचे़र ॥ हे नाथ० ॥
हे नाथ माफ़ पाप म्यान कर।
सन्ताप त्रिविध शाप दुख हर।
हे नाथ शफ़ाफ़ साफ़ मन कर।
हे नाथ पिल्लाप सुरूप प्राप्त कर ॥ हे नाथ० ॥
लोभ काम क्रोध मोह अहंकार।
मनु म्यानि निशि दूर कर इकबार।
राक्षस दुरात्मा दुराचार।

विचार खड्ग करुक संहार ।
साम्राज्य ज्ञान योग सिद्ध कर ॥ हे नाथ० ॥
यस चानि दया सपनि भरपूर ।
दुख शोक चलान फुलान तिमन नूर ।
ऋण रोग वियोग छुक गछान दूर ।
संयोग विभूति योग छुक भर पूर ।
भक्तयन मुक्त गछुन छु मुखतसर ॥ हे नाथ० ॥
निर्गुण सुगुण सकल निराकार ।
माया मयी रूप भाव प्रख्चार ।
युग पथ च धारवुन दश अवतार ।
सुय धर्मक्य शान नोन नमोदार ।
दुष्टन दुरात्मनन छु मर मर ॥ हे नाथ० ॥
हे नाथ यि दर्द सोज़ फ़रयाद ।
कन दारिव बोज सतुक यि सम्वाद ।
मन्जूरि नज़र कर वुन्य च प्रसाद ।
रोज़ बोज़ च सोन आचँर नाद ।
आदन बाज़ि करत वादः पूर्यर ॥ हे नाथ० ॥
सुय श्याम रमान सुबह शामुय ।
सुय राम प्रमास आस कामुय ।

सुय राम समान परम धामय ।
सुय धाम दमाल प्राणायामय ।
निर्मान सु राम सास भास्कर ॥ हे नाथ० ॥
ज्यव दिम म्य तिछ युथ ब गीत ग्यव ।
अनुग्रह प्राव त्राव प्रव ।
नवि प्रणाव भास सास रव ।
शिव गाश अनुभव शिव शिव ।
तव नवि नोव दयव गछ़ ब अमर ॥ हे नाथ० ॥



भजन नम्बर १४

पोत जूवे मोत वुजनो वुम ।
ललनोवुम नारायण ॥
प्रिय तमसिन्जि हीय तन नव
पोश वथरोस प्यठ गोशन ।
रोषि ययिना होश रावरोवुम ॥ लल० ॥
बाल पान तस पथ रांवरोवुम ।
हाल कांम सुय नाल रट हुन ।

शिव् शम्भो शून्य बोल् नोवुम ॥ लल० ॥
काम देवस नाम लेख नोवुम ।
पाप थावनस कर डेशन ।
रुम् रुम् सुय गम रमनोवुम ॥ लल० ॥
दार् पथ दार् वार् वुछनोवुम ।
ज़ूनि छोडुम मन्ज तारकन ।
मारकन मन्ज़ नाल मुचरोवुम । ॥ लल० ॥
लुनि मन्जुलि लोल् ललनोवुम ।
बोल नोवुम सुबह शामन ।
चौर सोवुम सुलि वुज़नोवुम ॥ लल० ॥
ज़ोर भम् कुय मीर वुज़नोवुम ।
फेर्नावुम तति हेरि बोन ।
वेरि तसमान्ज शेरि वातनोवुम ॥ लल० ॥
ज़ंग नार स्यूत वार् छलनोवुम ।
तव् लोनन नार शोलान ।
अछिव बूज़ुम कनव वुछिनोमवु ॥ लल० ॥
कन्द् नाबद् आग्दनोवुम ।
फन्ध करित यूरि अन्तन ।
ऋन्द लोवमुत वोन्द फुलनोवुम ॥ लल० ॥

हंस द्वारै वार पान परजनोवुम ।
प्राि प्रारोस राम रादन ।
ब्रह्म सर पान सग करनोवुम ॥ लल० ॥
अथ वासय रास खेलनोवुम ।
श्वास ओश्वास नोन छु भासन ।
सास भास्कर विकास भास नोवुम ॥ लल० ॥

भजन नम्बर १६

परि पूर्ण नूर भोरमुतये ।
स्वर मोतये आंगन चाव ।
शान्त निर्मल भ्रान्त कामवुनये
भासवुनये सास रव ज़न ।
शिव शम्भो अलख बोलमुतये ॥ स्व० ॥
नङ्ग भस्मा अङ्गन बोलमुये

हटि भुजङ्ग जेठि तस छि गङ्ग।
डयकि चन्द्रम टयकि ज़्वलमुतयें॥ सू० ॥
अलक बूजित तिम गूरबाये
जसोदाय मान करान विनती।
थन द्यारौ मोरनम फुतये॥ सू० ॥
यवौ दुध थवनि आरद मोखये
कन्द नावद सु वोन्दु सान।
ह्यत जसोदा करान ओन्टु पोतये॥ सू० ॥
जोगि दोपनक योगी ज्ञानिव।
भोग त्रावित छुस निराहार।
काम दीवस भस्म कोरमुतये॥ सू० ॥
लोभ छौम नहीं नै अभिलाशा।
आशा यह एक मन में।
कृशण दर्शन करनि आमुतये॥ सू० ॥
राधेश्याम को बोलो आदेश।
ईश जोगी वेष धर के।
तमि अभिप्राय योर आमुतये॥ सू० ॥
बूज़ जसोदायि ह्यसु चिसरानी।
सानी सानु विनथा बोज़।

ख़ाचि बालुक छु रात ज़ामुतये ॥ सू० ॥

च्रानि दर्शन् गछि तस छाये ।

राय क्या छय माय भर्‌हस ।

अघूर भैरव फेर गछ़ पोतये ॥ सू० ॥

जोगि वोननस छख अनज़ानी ।

मान योगियन हुन्द सरदार ।

राज़् जगि हुन्द माजि जामुतये ॥ सू० ॥

सृष्ट स्थ्यत लय अनुग्रह चियि दण्ड ।

अन्द् ब्रह्माण्ड् नित्य कर्‌वुन ।

शेष शाये ईश आमुतये ॥ सू० ॥

सुख् मुख् सुय दुख दादि कासान ।

भासान ज़न सार् निशि ब्योन ।

नोन अनुग्रह छु बन्योमुतये ॥ सू० ॥

दुष्ट गालन् श्रेष्ट छिस पालन ।

भूमि वालुन छुस वोन्य भोर ।

काल्‌ कालन पानय पोलमुतये ॥ सू० ॥

भार जगि हुन्द वार् छुस वालुन ।

गालुन छुस दुष्ट सम्बन्ध ।

पालन कर्म वेदव वोनमुतये ॥ सू० ॥

त्रन भवनन भय् सुय कासान ।
भासान सुय निथर्नाने नोन ।
मूल ज़ुगि हुन्द ब्योल वोवमुतय ॥ सू० ॥
योग् मायायि समयोग करिथ्य ।
प्रेम् भग्थ्य नित्य हर्षान ।
कृशण शंकर करिथ नालमुतये ॥ सू० ॥
ईश्वन् किन कोरुक वार्ं संवाद ।
दर्शन् आस हर्षानी ।
ती वोनुक यी ज़गतस ह्योतये ॥ सू० ॥
शशि लूसित रव खोतमुतये ।
प्रव तारकन हुन्ज़ चमकान ।
शिव नाराण कुनय गोमुतये ॥ सू० ॥
नोन वोन पान् यलि हर् नय ।
बरन्य ताग् मुचरन् आय ।
निब्र अन्द्र एक भोसमुतये ॥ सू० ॥
वोन्द्र इन्द्र रव मन फोल्मुतये ।
मंध्यान्च संधि भासान ।
सुब् शामन मेल कोरमुतये ॥ सू० ॥
वेद् वाणी ईंकू माव होवुक ।

मोवुक कस यि सीरि इसार।
शाम प्रभात अर्ध म्यूलमुतये ॥ सू०
देव आकाशि पोष वर्षाणी।
अछ रछ मच नचुनस गय।
द्राव शम्भो सु आकाश खोतये ॥ सू० ॥
कर्म भूमि धर्मुक सोथ द्युन।
परम पावन मर्यादा।
भोर जगतस तुलनि आमुतये ॥ सू० ॥
दुष्ट दुर्जन नष्ट करनावनि।
भरनावनि सृष्ट आनन्द।
ईश चय छुक जेष्ट मोनमुतये ॥ सू० ॥
रक्षा कारन सिद्धन साधन।
वेद विरुधियन वध करवुन।
शुद्ध धर्मराज अन्द गोमुतये ॥ सू० ॥
नाद लोयुम तती लोल होतये।
रासुक भास यानि वनि आम।
सास भास्कर जन पूरि खोतमुतये ॥ सू० ॥

भजन नम्बर १७

भक्त भावनायि मोक्त ग्योल ज़ावो।
शक्ति पात द्राव अनुग्रह फल।
पुःखत कारण छु तमिकुय चावो।
मुक्त मुखतसर मानस बल।
हंस पखवय पान वुफ़नावो। श०।
नन्द गोर्युन परोहित आवो।
मुखत माल हयत कारुक मंगल।
वाक्य खादन्रुक ताक साथ द्रावो। श०।
हार अनमूल वुछित व्यसरावो।
मन जसादायि-गयि चञ्चल।
यथ छु पुशरुन प्रास थदनावो। श०।
बाल गोपाल तमि बाल भावो।
बालक ह्यत करान छ्ल बल।
गिन्दनस सु गिन्द बोलसन आवो। श०।
गय लजि पजि ती प्रकटावो।
यी बूज़मुत तिमौ ह्ल चल।
अज़ सा सन मन्दछ्यम नावो॥ श०॥

अन्द्री तस छन्दरुन आवो।
इन्द्रस स्यूत करि क्या छ़ल।
सु छु चोर चोर करान हाव भावो॥ श॰॥
छ़ाल मारान जागित आवो।
त्यागित लज करानि ग्रांगल।
माल नीनस गल में पावो।॥ श॰॥
डाल दिवान श्रुर्य ह्यत द्रावो।
बन्सरी ह्यत नैन पद्म दल।
राधा कृष्ण वाद प्रकट्यावो॥ श॰॥
दम गौ तस वनि कस ग्रावो।
रुम रुम गय गुमन तल।
ह्यम कस त दिम वुथ कस हावो।॥ श॰॥
लारान पत लज्ज़मिच़ दावो।
प्रारान छ़ित गय निर्बल।
हारान मोख प्यठ सूर्य तावो॥ श॰॥
असवुन रस भरवुन चावो।
ज़ोनुन लजि़ गय सुर्हामल।
माल कडुन नाल त छ़्क्रनि द्रावो॥ श॰॥
फलि फलि माल अकि ह्वावो।

छु कगित छुनिन मन्ज़ जंगल ।
निगलन छु नार तस लरज़ चावो ॥ श० ॥
प्रास क्या दिम् खास छ्युन्यावो ।
सुन्य गरि ननि अज़ प्यठ तल ।
गन्ज़रन माँ छि नालय द्रावो ॥ श० ॥
दय लाज रछ शर्म सीर थावो ।
आसर् लर आवित बर तल ।
सास भास्कर खास प्रकटावो ॥ श० ॥

भजन नम्बर १८

नाल्मति रटहत डगंय ज्यट त माल् ।
बाल् गोपाल् सान्य पालना कर ॥
दाय बोज़ मायि किन गयस यच मुतवाल् ।
लाययन मालि पुछि छायि प्रम रोज़ ।
नबच्यन तारन गंडय ज्यट त माल् ॥ बा० ॥
वन् धन् मन् मन्ज़ि लजमच शर्मि जाल् ।
मोखतं माल अन् कति पुपरन भोग ।
मुखतसर वननम असलय छि छिनाल् ॥ बा० ॥

शचि मच तापि मन्ज़ि शच गयि कमि हाल ।
मन्दछेमच सुच पानस करान ।
पननी योद वातिहेकु ह्यन चोलुम दिवान डाल ॥ वा० ॥
छालु ओस मारान बालु वालु गोपालु ।
ग्वालु बालै स्यूत युच हर्षमय ।
माल कडुन नालु तु छ्हरन वालु बालु ॥ वा० ॥
जशोदायि हाल गौ युच गयि वेहालु ।
अहवाल भावि कस कमि हालय ।
गामच निहाल गयि युच दोपुन गौ महालु ॥ वा० ॥
वडि नाद लोयनस हता म्यानि नन्द लालु ।
लोल आम बोलान कृष्ण कृष्ण छुयस ।
चालि चालि नेत्रन छम मासतनि चाल ॥ वा० ॥
अन्तर्यामी जानान अहवालु ।
नालै रटुन जसोदा ममतायि सान ।
मायि सान आसवुन छुस वनान मिसालु ॥ वा० ॥
माजाय मोख़त ब्योल कोरमय वनस हवाल ।
मोखनु थरि रंग रंग तु कुलि फुलिमित ।
माख़त सीत भरन आयि जंगल कोह त वालु । वा०

हीरि जन स्रो ग्रामच वीरि नेरि फल निहाल्।
गीर ग्रोज फेंछा पछ छचस इत्रान।
वीर तति यीर् नत् जोनुन शुर्य खयाल्॥ ब० ॥
द्रोपनक नीग्वि शुर्य शुयि बुड त बाल्।
पोखन् कार मोखतस करित्र अम्बार।
फलि फलि खल समि त्राव वोनि मलाल्॥ ब० ॥
मारी सपिथ आयि अज़ि लोक बुडि त बाल्।
मोखत् कुलि मूरि मूरि भरि भरि वुछान।
दुर शहवार् शब चराग रत्नन्लाल्॥ ब० ॥
अल्मास ज़मरूद मोखत् नीलम मिसाल्।
भरि भरि कुलि त कान् दान् दान् सेर।
सासबद बागवान् लछिबद द्वारपाल॥ ब० ॥
काश्तकार लछिबद खुद काश्त नन्दलाल्।
यंग माया वुछित गय् हैरान।
सोम्बरान भक्तिकिन लूक मोखत सुकोल्॥ ब० ॥
मीनित बैगरान् कस वाति कीत कनाल्।
बैगरान नन्द् गूर जागीर दार्।
साखिय घर् भर मोखतकी गतिकाल॥ ब० ॥
बैगरान भाग्य बस यि ल्यूखमुत कपाल्।

कारिगर मोछिफोल सोंव्ररावान।
डोशित परोहित क्रेशान तमि हाल॥ व०॥
ज़ानुन वेल बोत मेलनुक तमि काल।
अनुग्रह पपनस नोन शक्तिपात।
गणेशि त्रख सोम्बरनि द्राव आग्र रुत फाल॥ व०॥
खार्बादि मोखत अनमोल बिथि रत्नलाल।
गणेशि त्रख प्रत कांसि मोरनस लोल।
हतब्रादि गुरि भार्यत गव खुश हाल॥ व०॥
लोकच घर भरि मोखत पोखत ख्याल।
नन्द गूरि देवार मोखतुक लोद।
भक्ति भाव ज़ानुक सारिवय सु दयाल॥ व०॥
सासबादि गुरि भागि मोखत बिथि रत्नमाल।
प्रास पुशरनि मोग बृत्तभानुन।
सूज़ुक यश द्राव आकशि पाताल॥ व०॥
परोहित थ्यफि कृत ज़्यवि स्यूत कताल।
वैकुन्ठनाथ पान ब्रिजमोहन।
नव निधान हयथ कवीर लच्मी दिवान हाल॥ व०॥
सुय शाम पीताम्बर नाल वनमाल।
शेरि मोर मुकुट बन्सरीधर।

शुस्वतसर भक्तथन छि मुक्ति तत काल ॥ ब० ॥
तमि खेल् मेलान भक्तयन सु काल ।
खेलान अशनास कारथ गास ।
भास्कर सास भरि भरि प्रेम प्याल ॥ ब० ॥

भजन नम्बर १६

रथाकृष्ण बोल लोल छु आमुतये ।
नोन द्रामुतये बिन्द्राबन ॥
भाहिनी रूपा दारित आमुतये ।
मोह मोतये छुस सोर त्रिभुवन ।
मोह घटि श्याम् रुप् सुबह् फ़ोलमुतये ॥ नो० ॥
रम्भल्यत्र केशव तम्बलोवमुतये ।
त्रिभुवन पति श्री काम् मर्दन ।
सम्ब्रलित पत ब्रोंट मसतान्मुतये ॥ नो० ॥
रुणि गोड श्रुणि दार सोर साम् हातये ।
वेदि शब्द शून्य पूर मुतये ज़न ।
साडि बुड़नि पीताम्बर दोग्मुतये ॥ नो० ॥

नाल माल कननय सोन ओरमुतये ।
जोरमुतये मोखत चूनि लाल मन ।
कक्रकर मछवंद सन्धोरमुतये ॥ नो० ॥
भुमनय मन्ज़ सुम खाल कोरमुतये ।
भरिमितये नैन मस खास ज़न ।
शेरि मोर मुकट मोखत ज़ोरमुतये ॥ नो० ॥
मन्द हास इन्द जन नभ वोथमुतये ।
तम्बलोवमुतये शिव शम्भो ।
तमि रुप गोकल सखयोंमुतये ॥ नो० ॥
वाजि वुगरि आन वाजि राजर्यनि कितिये ।
ज़गि होन्द राजि मोहन सु मोहान ।
कनिनी द्राव त्रियि वेष दोरमुतये ॥ नो० ॥
त्रियि वेष दारित द्राव लोत लोतये ।
आविजि ज़ाविजि ग्रायि मारान ।
राधायि वुछिने धरि द्रामुतये ॥ नो० ॥
आंगन मंज़ चाव सांग कोरमुतये ।
नागिन केशन अलराचान ।
अम गोख चन्द्रम नभ छु वोथमतये ॥ नो० ॥
मोहनी रूप आलव कोरमतये ।

वांज वुगंरि आन वाजि साज़ सॅमु सान ।
राज़ द्वारस योर कननि आमुतये ॥ नो० ॥
देवन त ज़ीवन सुय मारमुतये ।
ऋषि ऋेपान डेशिहोन नलि नोन ।
सास भास्कर ज़न पूरि खोतमुतये ॥ नो० ॥

भजन नम्बर २०

खोनि मन्ज़ ललवत ईश वेष धारो ।
श्याम रुप निर्विकारो वे ॥
माया मस के सौदागारो ।
मोहान छु खरीदारो वे ।
आख मालि कुनने कमि शहारो ॥ श्या० ॥
थोकमुत छु पकि पकि क्रोर पत लोरा ।
पन्थन दूर कति प्रारो वे ।
दो दरि लोगमुत प्यठ छुम मारो ॥ श्या० ॥
गो ल वृच्छ मानुन खज़द्वारो ।
ड़ि त गयि आश्वारा वे ।

सम्पदायि मायि तस वोनुन एकवारो ॥ श्या० ॥
गहन् पात साज् साम् लाग ज़रकारो ।
कोरि म्यानि राधायि वारो वे ।
महल्लखान मन्ज़ छुन् कांह अहलिकारो ॥ श्या० ॥
बूव मोल मगहम दिमय धन द्यारो ।
तूलि तूलि लोल सान वारो वे ।
लोल तस छु तोलुन कुस खरीदारो ॥ श्या ॥
मोहिनी राधायि स्यूत सरकारो ।
डीश डीश वसान अशिधारो वे ।
हिशि रस्त दोनवै कुनय आधिकारो । श्या० ॥
रंग रंग अगं अगं सोलह सिंगारो ।
बे रंग सर्व आकारो वे ।
वुछ वुछ प्रिछ प्रिछ करान छुस प्यारो ॥ श्या० ॥
कोंग कोफूरै मुश्क अम्बारो ।
बदनस तस छु प्रकचारो वे ।
सास रव प्रव ज़न मन्ज़ अंधकारो ॥ श्या० ॥
शीरन त पीरन छुस प्रज्ञान वारो ।
मार मच छोम अमारो वे ।
चोन्ज़ दायि शूभनय स्वर्ग परिवारो ॥ श्या० ॥

गोन्डुमुत छुय ना विवाह कारो।
तान जान मन्ज़् गज़ु द्रागो वे।
च़ायि हिशि जूनि शूभि छूर्य प्रकारो ॥ श्या० ॥
छ़ल छुस प्रछ़ान बल अधिकारो।
मे.छु मुद्रि कथ् व्यवहारो वे।
त्रियु भायु वोननस केंह लोगुस न चारो ॥ श्या० ॥
द्रापनस नन्द गोपी कृष्ण अवतारो।
तस स्यूत छूम मिलचारो वे।
मालि माजि कोरमुत सुय विचारो ॥ श्या० ॥
मोहिनी द्रापनस क्याह यि अंधकारो।
शोभि करित युथ बिखचारो वे।
तवु खातु कोनय ग्युतनय ज़हारो ॥ श्या० ॥
दोग्र शनिचूरमुत नट सांग धारो।
कोर्यन सयूत व्यभिचारो वे।
गूर श्युर ह्यत छूय नित्य पहरदारो ॥ श्या० ॥
वनिरावुल रूबवान दोग्र शनिवारो।
शोभि शरमि रुसत कारबारो वे।
बर बर फेरान त्रवित घरबारो ॥ श्या० ॥
कोलि कोनय छुनिनक गांडिथ पत्थारो।

रांड कूत भांड मकारो वे।
नाजनीन छ्यक डाग्नि पोषि तूलहारो ॥ श्या० ॥
राधायि वोननस ओननस आरो।
जर् छुयन च्य् गाटुजारो वें।
वर् छ्यस गामच तिस सन्दि अमारो ॥ श्या० ॥
कारण त इन्द्राज् वन्द् वरदारो।
इन्द रव नव गृह सितारो वे।
हुकमस छि तावेह छुक सु सरकारो ॥ श्या० ॥
जगि मन्ज् धारान दश अवतारो।
दुष्टन करान संहारो वे।
ज़न्म ज़न्म तमि सुन्द म्योन मिलचारो ॥ श्या० ॥
पास छुचन हास त्राव नास त्रास फ्यारो।
आस् कमि द्रोय युथ ढकारो वे।
सास भास्कर छोय तमि सुन्द चमतकारो ॥ श्या० ॥
मोहिनी लोलुक तूल अम्बारो।
होवनस कृश्ण रूप वारो वे।
धारि ओश दोन वन्न वसान आबशारो ॥ श्या० ॥
अन्द्र निवर् कृश्णस कुनय आधिकारो।
कुनिरुक वन्यर क्या सहारो वें।

क्रशराय राधायि करवुन प्यारो ॥ श० ॥
महाराज़ बनिथय यिमय शोभिदारो ।
कारण तँ देव परिवारो वे ।
लय करिथय निमथ स्पूत वारो ॥ श० ॥
प्रेमुक वादृ दिथ द्राव वारु कारो ।
सम्पदायि ह्योतुन मुोल त्रारो वे ।
मायातीत सुय जगत आधारो ॥ श० ॥

भजन न० २१

पेश शायन ईश नोन द्रावो ।
आव राधायि वर्ने ।
बाल गोपाल ह्यत बृज बाल ।
नाल शोभवुन वनमाळ ।
बाल कननय मोखत् चूनिलाल ।
मुकट् डयकि ट्यकि खाल ।
पीताम्बर् सु श्याम प्रकटाव्रो । आ:० ।
स्वर्ग अछ् रचु नाच करनस ।

गन्धर्व स्वर सान पगनस ।
इन्दु रब गत् करनस ।
स्वर्ग मंडलकि ध्यान सुरनस ।
दुर्गायि वर्ग वर्न वानो । आ० ।
गरुड़ वाहन शङ्क चक्र दार ।
शेरि मुकट् शोभिदार ।
गो लोक ज़ान वृज परिवार ।
इन्द्राज् छत्र बरदार ।
योग् मायायि हुन्द हाव भावो । आ० ।
शोभि सान वोत मन्ज़ राज़द्वार ।
वैकुन्ट बन्यूमुत घरबार ।
गुल त बुल बुल हयत आबशार ।
बूलि बोलान रूस जानवार ।
राधाकृश्ण कृश्ण भक्तिभावो । आ० ।
स्वर्गी फर्श अर्श तावान ।
रंग् रंग् साज् सामान ।
प्रगं त पलंग अंग् रागान ।
साल रुयनि ब्यूठ शोभिमान ।
इछा भोज़न कोरुक भोग् भावो । आ० ।

लग्नुक लग्न सु पान् माहाराज।
ज़ागि मोकूफ गौ छुत तु वाज।
ब्रह्मग्यान स्थूल वथि साम्राज।
भक्तयार हन्ज़् रछुन लाज।
राज़्यगिनि माजि होर प्रभावो। आ०।
मधु ग्यव डेर खुत अग्नस।
व्रत गौ रेह वच्र गगनस।
प्रज़ापत पान् व्यूठ लगनस।
माया तोत मन मग्नस।
जगि सन्ज़् त्युथ उत्सव वन्यावो। आ०।
स्वर्गा अछ रच् योगिने गन।
विष्णु मायायि वन् वन।
कर्म लीखा योग लेखन।
कलुश गृह बीठ हर्षि ख्वानन।
वर्ष फ़रु रुत प्रकटावो। आ०।
सान गहन् मोखत् चूनि रत्न लाल।
स्वर्ग वस्त्र ज़ोर् शाल।
गुरि हस्त नाव धन द्यार माल।
धाज राजिरिम द्राव रुत फाल।

वाद् पूर्यर कृगन क्रावो ।। आ० ।।
सम्पदा ह्यत ब्रियि ूखवान ।
भांय बन्ध ह्यत दर्षाण ।
चालि चालि भक्त मोखत् वर्षान ।
कृष्णस ब्रियि राधायि सान ।
पान आलवान त द्राख लाव् तावो ।। आ० ।।
महाराज़् ह्यत सु महार्यन् द्रावो ।
यच् नन्द गूर भर्वोन चावो ।
योग मायायि भोग प्रकट् यावो ।
ऋण रोग शोक गयि छ्भावो ।
छुकन् तोषान दय टोठ्यावो ।। आ० ।।
दय पथ रछ गत नानि हावो ।
भय शोक दुख दूर करनावो ।
ऋण रोग मोह सारी हरनावो ।
श्रण योग क्षेम याद पावो ।
लाज सानि रछ मसो मन्दछावो ।। आ० ।।
वेल् मेल्नुक छुयना याद ।
मेलि दय तेलि रुम् रुम् नाद ।
गेलुन चलि त् गलि उपाद ।

फैति अन्द निवर् कृष्ण वाद ।
भास्कर सास प्रजलावो ॥ आ० ॥

भजन नम्बर २२

श्याम् रूपै हा ड़ाम्बलो ।
सुबह फ़ोलान फ़ोलान वोलो ॥
पेश शायन मुकट धारी ।
निशि च़य भास गरुडासवारी ।
ईश निर्वेष पाहि मुरारी ।
वेष करान करान वोलो ॥ सुबह० ॥
गूर शुर्य गाव वछ गूरबाये ।
राम खेलनि गोकल आये ।
द्रायि च़चय पति कमि अभिप्राये ।
माय भरान भरान वोलो ॥ सु० ॥
प्रेम दुध थ़चन ब छायि ख्यावीत ।
मायि नावद क्षीर खंड़ ख्यावीत ।
चूरि थावत कर कांसि हावीत ।

हू॒र् ग्रागान ग्रागान ब्रो॒लो ।। सु० ।।
साज़ मन्तुर अन॒ नायनि वेरे ।
रन॒ मागुम तमना नेरे ।
बाज़ य॒ल गछि अद॒ मा फेरे ।
नाज़ कगान करान ब्रो॒लो ।। सु० ।।
होशि चन्दय कचील क्रोनय ।
गोशि कग्हय पोषि वर्षोनय ।
गोशि मु॒ति गोस॒ क्या गोय म्योनय ।
पोष छावान छावान बो॒लो ।। सु० ।।
गोपियन हन्दि गिन्दन बाजे ।
योगियन हन्दि हा सरताजे ।
माजि ज़ाव कस चि़य छू॒ह् राजे ।
लाज़ रछान रछान बो॒लो ।। सु० ।।
खोनि लल॒वत इक्ना कुने ।
दिख च़ दर्शन चन्दहै सुने ।
रुनि जामन जग्हा॒य चूने ।
जू॒नि गिन्दान गिन्दान ब्रो॒लो ।। सु० ।।
तारकन मन्ज़ व॒न्य दिनि नेरय ।
मारकन मन्ज पत॒ पत॒ फेरय ।

गाम भास्कर उमास प्रारय ।
राम गिन्दान गिन्दान बोलो ॥ सु० ॥

भजन न० २३

ग हृत य नालय च साल् इखना ।
ब् प्याल प्रेमकि भरय हा लालो ॥
बजान स्त्रेहच नार बुजान यि लोल् नार ।
दजित म्य प्रेम शाह परै हा लालो ॥ ब० ॥
जर ज़र गाजथस सरि श्याम लाजथस ।
काच् ज़न ज़न बो दरे हा लालो ॥ ब० ॥
फिरान दफ्तर म्योरान दादी ।
परान वरक अन परै हा लालो ॥ ब० ॥
ग्राल् वछि गाव् छिय नाल् दिवान ।
सु लाल् मा गव गरै हा लालो ॥ ब० ॥
ऋषि आय क्रेषान ज़ाह छिन्न डेशान ।
बो माल् पोषन करै हा लालो ॥ ब० ॥
लागय ब् सन्यास गोपाल् इखना ।

व लोलि मन्जुल करै हा लालो ॥ व० ॥
कुलन कस्तूर चलन रटन वन ।
कालि हिय तन हरै हा लालो ॥ व० ॥
तवै व्र नर तल छुस लर त्रावित ।
च् पास कर भास्करै हा लालो । व० ॥

भजन न० २४

वानि दिमहोस ब्रिन्द्रावनसय ।
कथ वनसय रटनम जाय ॥

सखिवी समिवी हा सखियो सोख मोम्व दय नोन द्राव ।
श्याम् रूपानाल् रटहोन बाल् पानय वनि आव ॥
गोपाल हयत गोवर्धन सय ॥ क० ॥

लोल् वानी नादा लायोस पोशिनूल वाद् गोविन्द को ।
नाद् बिन्दं तार ज़ीर् भम वायोस कृष्ण गोपी सोहमसो ।
दक्षिणायन उत्तरायनसय ॥ क० ॥

मोल माज बन्ध कबील् क्रोनय त्रावित मान विय अवमान ।

परत पान बार् कुनय ज़ोनुय चिन्मय भाव सुरौ ध्यान ।
छ्यस प्रतिज्ञा योग क्षेम दिन्सय ॥ क० ॥

कोलन पोन्य क्यूर कुल्यन थ्रू द्राव वसत अवलग्नुन बाहन सासन
वन्दु चोल त वोन्दु फोल नोव वहार आव
गिन्दान नन्दलाल सीत दासन ।
असति थव करुहोस रुनि दामनसय ॥ क० ॥

लोल मज़्जि के लोलि ललनावोन चूरि थावोन हावोन कस ।
गूर् करुहोस वान्दि मन्ज साग्रान नित्य चावोन प्रेमुक रस ।
पान अ लुगोस नारायनस्य ॥ क० ॥

चोयिशीत लछ ज़ोवहर्षणस्य दर्शनय देवता आय ।
मोख्तु कुल्य ख्वति तिथिस वर्षणमय स्पर्शनसय छि गोपयन माय
ऋषि क्रेषाग्ण आकर्षणमय ॥ क० ॥

प्रेम् रासय अथवास करिथय सास भास्कर छु नित्य चमकान ।
नाद लायोस हर्ष रस मग्थिय सुलि नेरव काफ़िल छु दूरान ।
दोह धरि गछ़ि पत् लारनसय ॥ क० ॥

भजन नं० २५

फोलु वनि सोन्तय छुय स्योन लालो ।
लालो अज़ वोलो माल्युन स्योन ॥
अरवलि आरकन्ज़ गयि कसि हालो ।
चालि चालि ओश दारि हारान छुयस ।
यच काल गव वोन्य प्रारु कृत कालो ॥ ला० ॥
इन्नग्ज़ल लज़यच योम्बरन्य ज़ालो ।
ख्यालु हचत मसवल प्राराण छुय ।
दूर्यरुक दाग दिलस हचत छुय गुलालो । ला० ।
मायि चानि लुलि लुलि फोजिहिमालो ।
लयि लोसु इयि कर दियि दर्शुन ।
द्रिय चानि छुयम वोन्य गृत नो बु चालो । ला० ।
रोपि रोपि करहय पोपन मालो ।
रोषि मति गोयनो गोपण स्योन ॥
शेपि मा पोपनूल दोह गछ़ि उचालो ॥ ला० ॥
आदनुक याद पान वादु मो डालो ।
नाद लोय कुकिलव गोविन्द गू ।
आदन वाजि स्यानि ग्राव शुर्य ख्यालो ॥ ला० ॥
बाल वन्तु इयिना मालु छ्यत मालो ।

वाल छिस कननय ग्रायि मारान।
काल मा रावौ कस क्या सलालो॥ ला०॥
साकया प्याल् चाव माला मालो।
मुश नस् बाकी रोज़ि ग्राव।
बाकी रम् रस् वन मुतवालो॥ ला०॥
सास् मन्ज़् खास सुय रहीन नालो।
सास मलि सन्यास् मेलि गोपाल।
भास्कर सास छुय नाली नालो॥ ला०॥

भजन नं० २८

गोपी नाथ भक्त रक्षिपालो।
गोपालो अज़ वोलो सोन॥
ज़ूरि गोपी वुछि व्रज़ बालो।
ग्रारान छिय वाति छाल् मारान।
बाल् गोपाल नाल वनमालो॥ गो०॥
लयि लोस ग्रागन ग्रार् कूत कालो।
त्रियि ही तन नाविथ छयस।

द्रीय चानि छ्यम वनो व्योन च़लो ॥ गो० ॥
रछि रस्ति ईश देश रछपालो ।
निशि गोपियन वेप धारान ।
दारि दारि छ्यम अशिने चालो ॥ गो० ॥
नाल व्टहोन कमितान्य हालो ।
बाल् पानय लोल् लल् नाचोन ।
सुलनायतने क्या गोम मलालो ॥ गो० ॥
सोन्त आवर्तं द्राव रुत फालो ।
रंग् रंग् फ़ालि गुल त गुलज़ार ।
बहार नोन द्राव कोन् आख सालो ॥ गो० ॥
गुल त गुलज़ार द्राय पातालो ।
जग् लुचि थरि आय फोल्नस ।
माथि कन्होस अछि पोषि मालो ॥ गो० ॥
वीर ईर् गय गिन्दि गिन्दि चालो ।
शश् पञ्ज कयन चन्जिन्य तल ।
लगि शशि दर प्यट दुखालो ॥ गो० ॥
दीन दयाल् हीन् कृपालो ।
धर्मस खुर कर्युन कास ।
नतु मधुर मस अदोर जन्जालो ॥ गो० ॥

वेल् मेननुक फौजि संगरमालो ।
शाम् प्रभात् कर अथ्वास ।
सास भास्कर भास प्रथ कालो ॥ गो० ॥

भजन न० २७

श्याम रूप बोलो आम लोलये ।
ब करय ख्वोनि मन्ज़ोलयें ॥
शेरि मोर मुकट् विराजमान ।
पीतांबर धर सर्व शक्तिमान ।
मोक्त केश केश रम्भोलये । ब० ।
गूरि गोपी वछि गाव जान्वार ।
चोइशीत लछ ज़ीवन विस्तार ।
राधाकृष्ण कृष्ण वोलये । ब० ।
अथवास् प्रथ अकिस खेलान रास ।
अकरै कुनय ज़न त भासान सास ।
बे रंग रंग् सॉवोलये । ब० ।
पोष् अम्भरन सोम्बुर ज़न व्यूर छारान ।

इन्द्रराजन् नज़ अम्बर हांग
लान्बर करान कलोलये । ब० ।
रोषि रोषि गोपशा पोष व्यवरान ।
पश्योपि नेत्रव हर्ष वर्षान ।
होषि पोषनूल येरि ओलये । ब० ।
सूर्य चन्द्रम ब्ययि तरागन ।
प्रदक्षण करवनि छि बिन्द्रावन ।
मेलि खेलि रासमडोलये । ब० ।
देवीं अछु रछु तरागन ।
गोपी व नथ आयि बिन्द्रावन ।
अर्मान छुरु यचकोलये । ब० ।
ब्रह्मास प्यठ् यंयि स्ययि हर्षण ।
आकाशं देवता पोष वषण ।
शङ्करस यि कुछित मन ड़ोलये । ब० ।
शरु प्योस क्या सना छा यि महाराज ।
सतीज द्रौपदी रछ बुन लाज ।
ज़गि हुन्द ताज मलोये । ब० ।
सरु करनुय तस सु सरदार प्यव ।
गोपिया वनित ब्रज भूमि गव ।

ओं भूर् भुव् दिवान ज़ोलये ॥ व० ॥
र्यत गात गयि छुस न कैंहति भास ।
गानस मन्ज़ बुछुन निराभास ।
कृष्ण जुव मुरली वोलये ॥ व० ॥
स्पर्श छिन आस यच् हर्शा ।
विमर्श हयत नेत्रव दर्शा ।
चन्द्रं महल् जन पोखत व्योलये ॥ व० ॥
साम स्वर कास देवुन यि सम्वाद ।
आकाश् पाताल् सुय बिन्द नाद ।
नचान हयत ध्रुव मंडोलये ॥ व० ॥
योग बल् दल् दल् ध्यान धारित ।
तल प्यठ दशम द्वार् विस्तारित ।
सहस्र् दलं ज्ञान दीप ज़ोलये ॥ व० ॥
जन्म जन्म छारान गोम प्रच काल ।
वांस सूर प्रारान ह्यत गयस बाल ।
लोल आम छुम गोमुत ढोलये ॥ व० ॥
वैकुन्ठुक भास विन्नावन ।
साम भास्कर छु लोन परिपूर्ण ।
सुख हाव दुख ति कृत चोलये ॥ व० ॥

भजन न० २८

द्रायि राधा ह्यत गूरि बाये।
मयि कृष्णनि दिवान वन्य।
श्यामि रंगनय मन्ज़ सुबह शामन।
पोष जाचन मन्ज़ जंगलन।
आन्च छायन तमिसन्ज़ि गाये॥ मा०॥

छ्यत बोजल नील रंग रंग पोषन।
गोपि गोषण माल रटहोन।
होश रूदुस न तवि अभिप्राये॥ मा०॥

प्राण अपान पर तै पानै।
गोस मशिरत गयि यकसान।
शून्य त्रावित शिव धारणाये॥ मा०॥
द्वादशान्त चे प्रतिमे द्वारै।
ज़ूनि डबि बीठ रुटुन वोन।
शान्त प्रकाश तति वुछनाये॥ मा०॥
घट कति तति अटल गाशी।
षोडश कला नोन सु प्रकाश।
अमृत बिन्द शशि कलाये॥ मा०॥

अनहत शब्द मुरली बाटै ।
नाद् बिन्दुक जीर् भम साज़ ।
गोस कनन मनवन आये ॥ मा० ॥
अन्द्र् निवरै सु सुन्दर श्यामै ।
रुम् रुम् राम रमान ।
ओं सोहम परान कृष्ण राये ॥ मा० ॥
सूरि अन्तन रूद कथ शाये ।
वन् वन्नय ननि खोत् नोन ।
द्वारिकायि छा किन् मथुराये ॥ मा० ॥
समिवी नेरव फेरव, वनन्य ।
काल मरव क्या छु अरमान ।
राधि पोषनूल दोह गछि छाये ॥ मा० ॥
समिवी सखिवौ वन्य दिनि नेरव ।
बाल् पानै सु नाऌ रटहोन ।
राध कृष्ण कृष्ण राधाये ॥ मा० ॥
बुध राधा बूच् गूरबाये ।
प्रच् व्यथ मोगान कृष्ण राधा ।
पान नावान ज्ञान गगाये ॥ मा० ॥
माव् दोध थन्य नैरव कूनने ।

पान् दय फेरि खरीदार ।
युथ न परमान् आसन छ्योनि त्राये ॥ मा ॥
गुल त् गुलजार वास् आवशारे ।
रूसि भोम्बर ब्यथि जानावार ।
कृष्ण गोपी परान भाखाये ॥ मा० ॥
मेलि सौदा सास कर गेलन ।
खेलि अथ्वास करित रास ।
सास मास्कर सु प्रेम् मार्ये ॥ मा० ॥

भजन न० २६

ऊधव लोल् नार् दज़् म्यान्य तन ।
च् वन कर वाति मन् मोहन ॥
वनन वन्य दित छि लायान नाद ।
कनन गोसना सु म्योन फरियाद ।
सु छा मथुराथि ब्रिन्द्रावन ॥ च० ॥
दिनस रातस त्रशास सातस ।
छि प्रारान शाम् प्रभातस ।

चोलय ग्रावित मोह्हित तन मन ॥ च० ॥
नचाल अथवास कगित दिन रात ।
वजावान बन्सगी एक हाथ ।
सु श्याम प्रभात सुबुह शामन ॥ च० ॥
वनन वछय गाव वन्य दिवान ।
घरन मन्ज गोपी रिवान ।
बरन प्यठ तिम शारि प्रागन ॥ च० ॥
वजन रोस्त योस वजान सोय तार ।
दज़न रोस्त योस दज़ान लोल नार ।
बनुन दीपक मलहार ततचुण ॥ च० ॥
अग्र लज़ ज्यथि पवन भुतगात ।
चग चर ज़ीव दिन क्रिहो रात ।
सारान कृष्णाय कगान धन धन ॥ च० ॥
कगित नित्य रास मंडलुक ग्यूर ।
बुम्बुर अम्भरस तुलान तति व्यूर ।
दिगम्बर सास भास्कर ज़न ॥ च० ॥

भजन न० ३०

ओं परबुन हंस ताजदार।
कमि चनकुय जानाचार॥
ज़ाल लगिना सुय उन्का।
माल गन्डहम छुम तमना।
नाल रटहन सुय वालयार। क०।
कोछ़ ब दिमहय हा कावो।
गछ़ त वन्तस दियि दर्शन।
वछि़ वालिन्जि भावस इसार। क०।
पोषि नूलव पारयि हंसू।
कुकिल बेलान गोविन्द गू।
हर मुख छा किन हरद्वार। क०।
प्यठ गोषण रटनम जाय।
काल पोपण प्ययिमा हाय।
वोन्द हन्दर्यस त रोपि चलि यार०
खत वो लेखस हटिके रत।
ज़ाविलि कत सत शोभिदार।
यियि मत छ्यस ब दावादारा। क०।

वाल अनतने दूगिमा काल ।
आल जिगरस गयिमै परकाल ।
नाल जाम तस छि ज़रकार । क० ।
हंम पखव्रय पत लागेस ।
प्रारि प्रागेस डड़क वन ।
दोह दगि गछि सोरि लोक चार । क० ।
दद सोज़ुक सन्तूर साज़ ।
सासि परद ग्योव क़ोसतूर्य राज़ ।
वति ती ती वनान कोल तार । क० ।
भास्कर चेनत सासन मन्ज़ ।
रुम रुम खास छु भासानी ।
ललवुन छुप सुय सीरि इसरार । क० ।

भजन न०, ३१

गोवर्धन गिरिधर ।
सुन्दर सु श्याम यियि कर ॥

गन्डहोस न्यठ त माले ।

भग्होस प्रेम प्यालै ।
झरहोस चूनि लालै ।
कर्होस प्रणाम यियि कर । ॥ सु०
वुछिहोन अछिव मनोहर ।
लछिनोव सु श्याम सुन्दर ।
गछि कुठि करोस चामर ।
रुम् रुम् सु राम यियि कर ॥ ॥ सु०
मनविथ च गछ त अनतन ।
रूद कति खठित रटित वन ।
छुम दारि ओप अवश्यछून ।
सरि गछि तमाम यियि कर ॥ सु०
यियिना सु सोन आदन ।
कन शावि लोल् नादन ।
अन्जराति ल्लान वादन ।
गन्ज़रेह सुधाम यियि कर सु० ॥
कर वाति सु सोन मोहन ।
लोल् नार् दज़् म्य हन हन ।
शोलान यि नार छु दर तन ।
फ़ैलि तालि ताम यियि कर ॥ सु०

खेलि रास त्येलि यिलि राग।
मेलि दय छु धन धन भाग्य।
भास्कर् सु वेल तथ जाग।
योद् गेलि आम यियि कर॥ सु०

भजन न० ३२

लोलि ललवत थावत सुलनावीत।
वोलस सोन श्याम सुन्दरा सुन्दरो॥
पवनकि नार् तन छसयो नावीत।
छुम वुहान लोल तोन्द्रो तोन्द्रा।
श्रवण शिशि कलि पान शलावीत॥ व०
रंग रवरून प्रग वथरावीत।
निन्द्रि वुजत राज इन्द्रो इन्द्रो।
केहनो मंगयो गछतम पान हावीत॥ व०
हरद ज़ादी पोप फोलनावीत।
पोषनूल मा हन्द्रो हन्द्रो।
गोविन्द गू चखुत परनावीत॥ व०

नाद लायथ वाद् याद पावीत।
लोल आम कृष्ण गन्द्रो गन्द्रो।
प्रेम् दोध थ्यन् गछ्य ख्यावनावीत ॥ व०
गेपि मो गेष होष रावरावीत।
पोष लागथ गोन्द्रो गोन्द्रो।
कीन् भावथ सीन् मुचगवीत ॥ व०
हंस पखवथ पान वुफनावीत।
ब्रह्म रन्ध्र मन्द्रो मन्द्रो।
सास भास्कर रास खेलनावीत ॥ व०

भजन न० ३३

गछत भोम्बर वुछत् डेरंग, श्याम रंग आकार छा।
निर्द्वन्द शिव नाद् बिन्द छा, सूर्य चन्द्रम तार छा।
दुख चलि सन्मुख सु वुछहोन, सुख् मुख दूरव् नेरि नोन।
सुख् मुख् छा गुरु मुख छा, हर मुख छा हर द्वार छा।
वोन्त तस छुन् भ्रान्ति करवुन, छुन्तय पज़िहस वातनस।
हरद ज़रदी नववहार सुय, गुलज़ार छा गुल्नार छा।

हारि परबत शारि शारोस, शङ्कराचार्य़ व्यन दिमोस।
तार सर छा मार सर छा, खनुचल खाडुनयार छा।
मार मटि छुस पान मोरव, मार मोत नै वाति सोन।
अमार् तमिसन्दि नार छु ललवुन, अङ्गार छा अबखार छा।
दैव कारण ऋषि मुनीश्वर, बिन्द्राबन व्युन दिवान।
द्वारिकाय छा मथुराय छा, गोकलै गिरधार छा।
तावनुन बाज़ार यि संसार, खाम सौदा यावनुन।
कर्म फल खुरित छि चलु लार, इक़ार छा इन्कार छा।
बिन्द्राबन् नित्य छु गिन्दवुन, श्याम् सुन्द्र सीत असे।
ध्यान मय छा ज्ञानमय छा, निर्वाण योगाकार छा।
सामनुय स्यूत रास खेलान, भासवुन क्षण् क्षण् छु नोन।
दास प्राराय करि अथवास, भास्कर तीज़दार छा

भजन न० ३४

बहार आव कोनु आव दिलदार इम शव।
चलै व्यस गछ बनुस विलज़ार इम शव॥
होयन गौ अन्यं रंग लयि लोसुं प्रारान।

इम्बर्‌जल् च्‌यश्म् पुर खुमार इम शब ॥
दिमव छोह रोव करौ दोह तार् गिन्ढहौ ।
कोलन पोन्य फ्‌यूर कुल्यन सबज़ार इम शब ॥
सु रस् रस् व्यस च् अन्तन हाल भाव्रोस ।
तसन्दि हावस् म्य छुम वसि नार इम शब ॥
च प्रछ्‌तस म्यानि ज़्यावि अद् गोस् मा गोस ।
बुछान अछि लोस् दर इन्तिज़ार इम शब ॥
गनीमत ज़ान तु यी दम रोजि. मा कालि ।
पगाह मा मटि छुय म्योन मार इम शब ॥
ह्यमस ज़ाग नागिगयम छ.ागि वालन ।
सहान हीय माल जाहगि मार इम शब ॥
करान लेला लेला मस्त मजनून ।
ज़िन्दय दर गोर शबि बेदार इम शब ॥
म्य गोमुत सूर दूर्यर कोहत व चालय ।
व छूयस ललवान तिमय अंगार इम शब ॥
रिन्दव गिन्दुना करुक जिन्दु पान मरनुय ।
परान मन्सूर अन बर दार इम शब ॥
तवै भास्कर दिवान सासन अन्दर नाद ।
छु अज़लुक पान वूयन मिलचार इम शब ॥

भजन न० ३५

सुदर्शनचक्र हयत नोन नेर धर्मुक शान पैदा कर।
इशिस वक्तस च़ शक्तिमान् तिथि सामान पैदा कर॥
सनातन धर्मुची रछ लाज पनुन प्रण वार वोन्य पाव याद।
अधर्मुच गाल वोन्य बुन्याद सु गार्गी यान पैदा कर॥
गुलन खारन कुनुय माने, अन्यायस न्यायकुय तकरार।
पुण्यस पापस गोमुत यकसान तम्युक अवज़ान पैदा कर॥
कुटम्ब यौवन धनुक मोह मद अनर्थुक यच़ गोमुत अभिमान।
सूर्य प्रचण्ड दण्डुक रूप तिमन अवमान पैदा कर॥
परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय, अद पनुन पान पैदा कर॥
सनातन वेद मर्यादा, ब्रह्मांडस हेरि वोन प्रकटाव।
दुरात्मन दुर्जनन होन्द क्षय ब एक आन फान पैदा कर॥
दयानन्द शंकराचार्य महात्मा बुद्ध विक्रम बीर।
सु वेन्नादस ललत प्रवरेश सिन्धेमान पैदा कर॥
गुरु गोविन्द नरसिंह रूप नानक देव शिवाजी।
सिद्धि ऋद्धि हयत सत् ज्ञान सदा सनिदान पैदा कर॥
सन्नक सत ऋषि त व्यास गौतम अगस्त नारद त बयि भरद्वाज।

सनातन वेदकुय प्रकचार क्रिया यौ सान पैदा कर ॥
फर्ष प्यठ अर्षसय तामत, सु गोपण गोषणाय करनाव ।
रिया कारन सितम गारन, उलट पुल्ठान पैदा कर ॥
नवन पीठन अन्दर आडर नवन नाथन हुन्द साम्राज्य ।
तमिकि ज़िमवार नव सिद्ध प्रधान हनुमान पैदा कर ॥
सरप बद खाह त बिच गम हून्य इथिस समयस तिसन फान कर ॥
बुनिल गगर्गाय त्रट तूफान तलुक प्यट फान पैदा कर ॥
यि घट छुट छाय कास अन्दकार, प्रत्यक्ष भास सास भास्कर नोन
वहार हरदचि जरदी हाव हज़ार दास्तान पैदा कर ॥

———

भजन न० ३६

रटत ब नाल् वोल् सोन साल् कृष्णा ।
गन्है प्यट त माल् त्राव मलाल् कृष्णा ॥
निन्द्रि हत्य गछत बेदार चय सुन्दर श्याम ।
गन्ड़ित कोस्तभ व्ययि वनमाल कृष्णा ॥
चतुर भुज मोर मुकट चक्रधारी ।
वलित पीताम्बर दुशाल कृष्णा ॥

पनुन प्रण योग चेमुक याद चय पाव।
मन्ज़िल दूर्शम दोह गोम बाल कृष्णा॥
थवय भर्य भर्य दुघ थन्य प्रेम माथे।
चतं शुद्ध भाव् आम्य ज़ाम्य प्याल् कृष्णा॥
वनन बनबान वन्य दिथ नाद लायै।
च़ मन मथुरयि मारान ड़ाल् कृष्णा॥
ववित ब्योल मोखतुकुय जङ्गल फलित आये।
ब्रजिकिं तमि हाल् गय निहाल् कृष्णा॥
सतुच अथुवास दासन भास ननि नोन।
दिवान भास्कर छु लोल्चि नाल्र कृष्णा॥

भजन न० ३७

गन्डै न्यट त माल अज सोन साल् इखना।
जगत रच्छपाल कन्या लाल् इखना॥
पनुन प्रण पाव याद नोन बोज़ फर्याद।
सनातन धर्म पुछि गोपाल इखना॥
कुसंगकिन रंग् रंग् तंब आयि सुतरांव।

नरसिंह अवतार यमि कलि काल् इखना ॥
छि प्रारान प्रारि गोपी ग़ाव छारान ।
बनित मस्तान् मव सुतवाल् इखना ॥
नेत्र वथरै वनत मथुरायि गोकल ।
कला पूर्ण च कंसनि काल् इखनो ॥
छि फेरान जंगलन निगलान विरह नार ।
वुछान आकाश नत पाताल् इखना ॥
चय प्रारान वांस सूर छन् काँसि हन्ज़् कल ।
वुछान फ़िरि फ़िरि वसान अशि चाल् इखना ॥
फुलित वुन्क्यन छु लोलुन बाग शोलान ।
हर्द जर्दी अद अकाल् इखना ॥
करित अथवास सतक्रुय रास खेलव ।
च़ नान साम भास्कर निराल् इखना ॥

भजन न० ३८

क्रुनि इखना यावन कौ लोलो ।
खुनि ललवत करै व गूर गूरै लोलो ॥

निन्द्रि बेदार कुरथस त त्राबथम रव ।
वनन वनवान च्यै इन्द्रनि हूरै लोलो ॥
प्याल भरहै दोह प्रांशि इत सालस ।
तन ब नावै कुगं क़ोफ़ूरै लोलो ॥
शाम रोयस प्वठ च्यै गत करना ।
पान आलवै जन पोंपूरै लोलो ॥
लोल्य ब करहै मोल्य कुनि मेलखना ।
आदम खात्र अशिक़नि चूरै लोलो ।
मछि मछ बन्द हचि कुय छुक च बातुट ।
मनके चूर कनके दूरै लोलो ॥
कम शाहबाज सुन्दर त बियि गोन्दर ।
जाल् लगि_ति छि हूर मस्तूरै लोलो ॥
बाज़गारी बाज कम छुक च हाबान ।
बाज अनहत साज सन्तूरै लोलो ॥
सास भास्कर छु परि पूर नित्य चमकान ।
तमि नूर दोद कोहि तूरै लोलो ॥

भजन न० ३६

मधुसूदन शुद्ध दोध चूरे लोलो।
खोनि ललवत करै ब गूर गूरै लोलो॥
मन मोहन् वनि कुनि कनि इखना।
मोनि वन्दहै नन्द किशोरै लोलो॥
प्राण अपान अर्ग भर्ग पूज़ करहै।
अहंकार जाल द्वीप कोफूरै लोलो॥
प्रग वथरै मन कथन रंग रवकन।
तन ब नावै कुंग कोस्तूरै लोलो॥
नाल् रटहस अज़ सोन साल इखना।
माल् गन्डहै रत्न होन्जरै लोलो॥
कुकिल वनवान वन वन गोविन्द गू।
द्रोषि पोषनूल प्रेम कोस्तूरै लोलो॥
प्रेम साजच आःवाज नाद् बिन्द तार।
दर्द सोजुक बोज सन्तूरै लोलो॥
आर अवतार भूमि वाल पापुन भार।
मोह कसस कर चूर चूरै लोलो॥
हिय यावनन्य श्रावण आयि फोलनस।
गू गू चानि प्रेम मोम्बूरै लोलो॥

ह्रग वनवान च्यश्र पत नूर भरथ्य ।
मच्‌ मस्तान्‌ चश्म्‌ मख मूरै लोलो ॥
नाल्ल वनमाल हटि न्यट त कोस्तभ मन ।
शेरि मुकट वाल्य कनदूरै लोलो ॥
सतकुय रास अश रट चट प अथवास ।
सास भास्कर भास पूर पूरै लोलो ॥

भजन न० ४०

वनत पोषि नूल्‌ ओश यियिनाये ।
रोषि कति रूद छाये वन ॥
होषि वजिस तमि माये ।
जोषि तमि दरियाव चमन ।
पोषि कोत इम छि लानिन न्याये ॥ रो०
सोल सिंगार लोल पारनाये ।
ट्रय चान बम छ्‌नाव हीय तन ।
शाह परवय तोर वुफ़नाये ॥ रो०
कुंग्‌ रंग गोम रंग रिवनाये ।

प्रंग वथरोम रंग् रवकन ।
संग दिल क्या सु बे परवाये ॥ रो०
रूशित गोम अनोन सुलनाये ।
लोलि मग्जुल करित ललवोन ।
निन्द्रि ह्वोत इन्द्र निन्द्रि वुजनाये ॥ रो०
गयस् बेदार रूदुम ,छाये ।
द्वारि ओष वसान छुम न तत ,छ्यन ।
आलमि आब तव गछिनाये ॥ रो०
सुलि द्रायस तमिसिन्जि़ माये ।
अ्रम ह्युतनम मन्ज़ गामन ।
पि_ कोर त्रोत वेल बोज़नाये ॥ रो०
सुन्ज़ पारहस चोन्ज़ तै दाये ।
नील् नागै छुस व ज़ागन ।
दूरि काफिल दोह छिग छाये ॥ रो०
वालि अनतने रूद कथ शाये ।
काल मा दूरि यूरि अनतन ।
वालि बाल पान कोरनम ,जाये ॥ रो०
गहान शशि त रव गाह वुछिनाये ।

गाह छु आकाश गाह पातालन ।
सास भास्कर गाह तेलनाये ॥ शे०

भजन न० ४१

छ्यनुनु गोख तनु छ्यसयो ब थारान ।
छूसयो थ्रारान ग्यत्र बूरि यियि ॥
पतु लारन इमन शाह सवारन ।
हंस पखवँ वुफन गये ।
पर लूसिम कर छूथस थ्रारन ॥ छ०
कातु तम्बलावि यॉमि संसारन ।
आय कति सन कोर कुन गये ।
जाय वुछनै चाय अद मज़ारन ॥ छ०
व्यसि गिन्दुहव नभच्यन तारन ।
लोल नारन वस म्य जाजिये ।
रोवु खान प्यठु पोत जूनि छारन ॥ छ०
रुम रुम तोस लुसस चारन ।
ओंकारुन पन म्य खोरमये ।

प्राण शुमुरिथ ध्यान छ्यसयो ब धारन । छ०
नागि-राय जन डुन्ग दिन छागन ।
छागि वालन जागि जागये ।
आगर प्यठ सागर फ्यारन ॥ छ०
लोल तोन्द्रस अन्द्र संधारन ।
जाम स्वर्गिक सुन्दर म्य पारिमये ।
तमि नोर नूर लल छ्यस ब हारन ॥ छ०
शवन जालित शशि त रव कारण ।
शशि कलि हुन्द शेहजार छुये ।
तमि गाशि लय त्रभवै कारण ॥ छ०
तव कुनिरस क्या सन्यर विचारन ।
सनि खोत सन्य वन्य म्य द्युतमये ।
आकाशि प्यठ पाताल फ्यारन ॥ छ०
खाम सौदा पाखत बाज़ारन ।
याचनुन मोखत मोल त्रोलये ।
कम शाह बाज़ बाज गय हारन ॥ छ०
सोस भास्कर न्रोन छु गाश धारन ।
रात क्रीलन अनि घट छयये ।
गाट माटस घट गाश गारन ॥ छ०

भजन न० ४२

पथ वन क़ोर बिगिन्यव गोव ।
पोरयि कुकिलव गोविन्द गू ।
स्वर्ग अछ़ रछ़ वोछ़ु लोल ह्यच़ ।
गोकुल मच़ गय नच़ुनस ।
सोय रचना नागद ग्यू: ॥ पो०
ती ऋषिनय गव कननय ।
मन सर लगि अन परने ।
लोल नार स्वर मलुक तननय ।
वननय चाय ध्यान सोरने ।
अहं त्रावुख परुख ओं स्व ॥ पो०
वुजान इमनय छु दर्दुक शोक ।
चटिथ सत परदु दाम दुरियाव चोक ।
अनुग्रह आलव तोरै गोक ।
इयत्रो इयवो छुन कॅंह रोक ।
दय टोठयोक जय जय छु: ॥ पो०
करिथ प्रथ कांसि स्पूत अथवास ।
गिन्दान नित्य गोपियन स्पूत रास ।
छु रुम रुम श्याम सुन्दर सास ।

बहान सासन युगन छुन् भास ।
विश्वास कोर .जन गछान अक च्यूह । पो०
वन्योमुत ब्रज छु हैकुन्ठ द्वार ।
नमान तति सूर्य चद्रम् तार ।
समान वृच गोपियन मिलचार ।
दमान दम् दम् छि लोलुक नार ।
सु व्यवहार वनत् कथ क्या छूह ।। पो०
सूर्य चन्द्रम् गोमुत मिलचार ।
नमित देवी देव एकवार ।
समिथ फ़लिमित छि गुल त गुलजार ।
अम्बर हारान भोम्बुर जान वार ।
पगान श्री कृष्ण कृष्ण गू गू पो०
छु कर केंह भास खास चिन्मय ।
असान रसमय वसान तन्मय ।
मांशत पर त पान गोमुत लय ।
सु भास्कर सास तति उदय ।
छु तेलान अन्द्र निबरै सूः ।। पो०

भजन न० ४३

रोशि रोशि ओष म्थोन यूरि अन्तन ।
भरहस पोषि तोन यूर अन्तन ॥
बाल गोपाल श्री नन्द नन्दन ।
शाम रूप धारवुन यूरि अन्तन ॥
द्वारिकायि छ किन मथुराये ।
वथरोस वति पान जायि जाये ।
मायि स्वर वायिवुन यूरि अन्तन ॥ भ०
बालि बाल पान तस पत रोवुम ।
दोह गोम बालि वोडाल प्रोवुम ।
लाल छाल मारवुन यूरि अन्तन ॥ भ०
वाल अन्तने कालि मा दूरे ।
थनि चूर सोन कति सन रूद चूरे ।
गोस मा गोस म्योन यूरि अन्तन ॥ भ०
समिवी सखियौ खेलव रास ।
अथवास करि वरि करि सोन पास ।
काव जूनि चलि ग्रहुन यूरि अन्तन ॥ भ०
कृष्ण कृष्ण करिथय लायोस नाद ।

राधाकृष्णा वोज़ि सोन फर्याद।
याद प्ययस वाद़ प्रोन यूरि अन्तन ॥ भ०
गोपालस सन्यास लागोस।
पाताल नागवल़ ज़ागि ज़ागोस।
लोलि मन्ज़ ललवोन यूरि अन्तन ॥ भ०
अन्दिहे न्याय कासि बन्धन।
व़ोन्दि मन्ज़ भासि देवकी नन्दन।
वन्दसै कबील क्रोन यूरि अन्तन ॥ भ०
दत़ गयम तस पत़ वत़ गागान।
हत़ तत़ सुय छुम नत़ माऱ पान।
मत़ना सु म़ोत सोन यूरि अन्तन ॥ भ०
लोलर वोन्दकुय सीर भावोस।
नरि आलवान लरि पान सावोस।
लोल आम मोम्बरुन यूरि अन्तन ॥ भ०
शशि त रव निशदिन ननि खोत़ नोन।
हशि रोस्त केशव रास खेलवुन।
भास्कर सास़ गुण यूरि अन्तन ॥ भ

भजन न० ४४

क्रस वन् .ज़ीर भम सीग ओसमै ।
हंसो रुम रुम .छ्यस ललवान ॥ हं० ॥
शम दम धारणायि ध्यान धोरमै ।
प्रुच़ प्यथ व्रुच़ गोपी वखनान ।
राधाकृष्णा कृष्ण याद .चोंग्मै ॥ हं० ॥
गणपतयार् चे नावि ब्यूठमै ।
शुराह याग शेपूगि फ्युर बोलमान ।
शाहपर लूसिम त गाह ड्यूठमै ॥ हं० ॥
नप् नप् करवुन छ्यप दोवमै ।
दुपहम केवल पननुय पान ।
वुफ कोर .छ्यपि .छारि वुफनोवमै ॥ हं०
पवनकि नार स्यूत पान तोवमै ।
दज़वन्य शाह पर करनस मान ।
शशि कल् ज़ल् रम् शेहलोवमै ॥ हं० ॥
सातय सत सोस तोस् चोरमै ।
बाल् पान् द्रायस गोलुम पान ।
दम दिथ ओंकुय पन खोरमै ॥ हं० ॥
लाल् नार् मन्ज़ वार् पान .जोलमै ।

ीतायि मायि .जन नाज़नीन पान ।
कलि गयप हुञ्ज कार मल गोलमय ॥ हं० ॥
क न कोन कोन यियि मोनि लोसमै ।
ो न सुचरित छोन्य हुम न भासान ।
कोत गव दय येति ुन्य ओसमै ॥ हं० ॥
गोपालस सन्यास लोगमै ।
सास तनि पूरुम वोलास शोभिसान ।
पाताल नागबल .जागि .जोगमै ॥ हं० ॥
पर त पान सर्शिगिथ स्वर गूनमै ।
लोलि .जन ललबुन सुय ललचाण ।
नगु पानु नचनस रंग .जोनमै ॥ हं० ॥
दश नाद मुरली वाद बूज़मै
हिशि गेस्त केशव निशि .जान पान ।
राधिका शुद्ध बुद्ध म्य तोर सु.जमै ॥ हं० ॥
.जाग्रत स्वप्न आदि अन्त ओस्मै ।
सन्ध्यानच सन्ध नाद बिन्द .जान ।
मास भास्कर विकास भोगमै ॥ हं० ॥

भजन नं० ४५

ज्ञान दिम पान हाव रटथो नालो ।

श्याम रुप राम दयालो वे ॥

गथ दिम पथ रकुम सत श्री अकालो ॥ श्य०

मत गुरु पादन वन्दहै कृपालो ।

मत् चित् आनन्द निगालो वे ।

गणपति मत सती हृदि द्वारपालो ।। श्या०

दासन पास कर दीन दयालो ।

सास रव भास निर्मालो वे ।

ईश्वर महेश्वर सर्व रक्षपालो ॥ श्या० ॥

पिलु कोत दोह दार गव संगरमालो ।

बाल पान छुम छोटन चालो वे ।

आयाम सोगनकूयति गयम बालो ॥ श्या०

पीतांबर दर अम्भर दुशालो ।

मोर मुकुट चूनीलालो वे ।

शेरि है त पारहै भक्ति मोखत मालो ॥ श्या०

क्षोर खंड नावद भरहै थालो ।

साल वाल त्रिजगत पालो वे ।

ड़ाल मत दित वोन्य मा रठ मलालो ॥ श्या०

दूर्यर सूर गोम कोताह ़चालो।
रेह नेरि फटिथ्य पातालो वें।
आर छुयन् वार छुमन नार् पान ़जालो॥ श्या०
अवसर आवलनि यमि जन्जालो।
तार दिम बडि कृपालो वे।
सेर गोस नेर नोन मो मार् ़छालो॥ श्या०
प्रथ काल् पथ रछु यमि कलि कालो।
रुति फाल् हाव सु कालो वे।
कालि काल् नेर नोन मुह मद गालो॥ श्या०
ज्ञानुक प्याल चाव मालां मालो।
ध्यानुक द्वीप प्रज़ालो वे।
मस च्यत रस रस बन् मुतवालो॥ श्या०
सतची तलवार हयत ़च प्रतिपालो।
दुष्ट दुर्ज़न असत गालो वे।
ज़य जय दिग्विजय जग संभालो॥ श्या०
य़ुच काल गय वोन्य प्रार् कूत कालो।
हारान अशने चालो वे।
सास भास्कर छुय दिवान प्रेम नालो॥ श्या०

भजन न० ४६

वुन्द इन्दु रव मन फोलनावीत।
प्रजनावीथ कोर सन् गव॥
राज़ इन्द्र गव छ्रिद्रावीत।
देह मन्दिर .जन परम शिव।
श्याम सुन्दर निन्द्र पावीत॥ प्र०॥
श्याम् प्रभात अथ् मिलनावीत।
मन्ध्याम् .च सन्ध भासान।
स्वप्न ज़ाग्रत विघ्न ओपरावीत॥ प्र०॥
निर्वासन रास खेल् नावीत।
शक्ति पातुक भक्ति प्रभाव।
पोखत कारण मुक्ती दावीत॥ प्र०॥
शून्य नाद बिन्द शिव बोलनावीत।
दास स्वामी भाव करिथ अथवास।
भास् अवभास् खय कास्नावीत। प्र०॥
निन्द्रि हचन्य मन तम्बलावीति।
निथ् ननि ननि द्रायि बाज़ार।
तन् मन् धन् घर् मार त्रावीत॥ प्र०॥
ज़्यव नोर् स्यूत वोर् छलनावीत।

गव तति तोर केंह न तु क्याह ।
अछव बू.जुन कनव बुछनावीत ।। प्र० ।।
रूपित गव अनोन सुलनावीत ।
लोलि, मन्जलि लोल्य लोल्य कगोस ।
.चुरि थावोन कस ह्यकोन हावीत ।। प्र० ।।
रिन्दु गिन्दुना छु संसार हावीत ।
जिन्दु मरणुय वोन्दु.चलि खय ।
रिन्दु पानय द्वन्द भाय त्रावीत ।। प्र० ।।
चित्त विकासु मन फोलु नावीत ।
सास आदित्य प्रज़लान रव ।।
श्वास अश्वास भास्कर प्रावीत ।। प्र० ।।

भजन न० ८७

ओष छुम स्यूत सुतिये, तोषना बोष दय आम ।
पोष वथ रोस फ़ोतिये, रोषि मा रोज़्यम पाम ।।ओ०।।
गिन्दनस गोमुतये, नन्दु नन्दन निष्काम ।
इन्दु रव वोन्दु फोलमुतये मन्ध्यानच सन्ध सुवुश्याम । ओ

वृच म्यानि गुरबायि सतिये, छिन्द्ररेमचु सत काम ।
निन्द्रिह .चु प्रागन ततिये, सुन्दर ह्यत थनि जाम ॥ ओ०
स्तोतनम आरु कतिये, धारणायि प्राणायाम ।
श्वाम ओश्वास मोदतिये, व्यास नारद सुधाम ॥ ओ०॥
फेगोस ओन्ठ पुतिये, नेगेम लोलु दय आम ।
करहोस नालमतिये, बलु पानय तमना द्राम ॥ ओ० ॥
केंह ऋषि छि मस्तानु मतिये, केंहचन पन्थ दूर्याम ।
केंह ऋषि छि मन्दछे मतिये, केंहचन पोख्तु गव खाम ॥ ओ०
बालु पानु केंह छि द्रामतिये, कालकालु लबन विश्राम ।
विन्द वुछतु ज़िन्द प्रापतिये, रुम रुम श्याम रूप सुराम ॥ ओ०
मुरली शब्द भरमतिये, रसु रस ह्यसु व्यसर्याम ।
लय वुछत पय आम ततिये, अनहत शब्द पयगाम ॥ ओ०
शशि कल .जल सुगिमतिये, निष्कलु वोन्दु शेहल्याम ।
कलि कलि गयम सुमतिये, तल प्यठ ती मोलव्याम । ओ०
कारणा छि लय गामतिये, गन्धर्व ग्यवान स्वरु साम ।
स्तातनस पानु सरस्वतिये, सिद्ध मार्ग वोल ध्याम ॥ ओ०
शाह पर छि तसि उदमतिये, वननस ज़्यव गयि थाम ।
द्वादश द्वार उदमतिये, अक त नव तति भास्याम ॥ ओ०
भास छुमन रास ख्यूलमुतये, सास भास्कर प्रज़ल्याम ।

श्वास ओश्वास एक स्थितिये, शान्त तेज़ बीज प्रकट्याम ॥ ओ०

भजन न० ४८

रुम रुमश्यामाकार ।
.छान्डोन बिन्द्रावन त̱लो ॥
नाद बिन्द तेज़ ओंकार ।
माधव नन्द नन्दन त̱लो ॥ रुम्० ॥
मन मथुरायि आधार ।
वथरोस मन्ज़ नेत्रन लो ॥
अत गत .जन्म .जन्म भार ।
सत किन लगि तथ छ्यन त̱लो ॥ रुम० ॥
द्वारिकायि होन्द सु सरदार ।
.छान्डोन मन्ज़ तारकन त̱लो ॥
हर मोख̱ छा हर द्वार ।
नेरोस मन्ज़ मारकन त̱लो ॥ रुम०
गोकल कुय गुल̱ बहार ।
गोपाल सी̱व गोपियन लो ॥
गो वर्धन गिरि धार ।

ननि नोन सु श्याम शामन त लो ॥ रु० ।
थनि .चूर ह्यत गूरि यार ।
लूटान .गूरि बायन त लो ॥
दुध लोट अमृत धार ।
चावान स्यूत भाजन त लो ॥ रु० ॥
कसुन काल संहार ।
हंसो ओं .जपन त लो ॥
नाद बिन्द .जीर भम साज़ ।
साधना छन व्यपन त लो ॥ रु० ॥
यि छु तावनुन बाज़ार ।
श्रावण तोत कलन त लो ॥
यावुन भ्रम बाज़गार ।
काल इम दाद बलन त लो ॥ रु० ॥
समत्रि शक्ति बाजार ।
भक्ति मोखत मोलवन त लो ॥
खाम सौदा पोखत कार ।
सुधाम लोलि ललवन त लो ॥ रु० ॥
मोर मुकुट शोभि दार ।
घटि मन्ज़ सूर्य प्रज़लन त लो ॥ रु० ॥

हटि ज्यट माल् शोभिदार ।
बाल छिस वाल् कनन त् लो ॥ रु० ॥
श्याम पीतम्बर धार ।
अम्भर मलित चन्दन त् लो ॥
गम भर तेज़ अम्भार ।
असवुन क्या सु प्रसन्न त् लो ॥ रु० ॥
रोनि गोड क्या ओनिदार ।
नच़नस गछ़न ओन्य ओन्य त् लो ॥
मान्ज़ि नम चन्द्रम तार ।
मन डोल अछ़ रछ़न त् लो ॥ रु० ॥
बन्सरी वाद् विस्तार ।
संसार सोर व्यसरन त् लो ॥
लोल् दित गोल आकार ।
नच़नस क्या प्रसन त् लो ॥ रु० ॥
सास भास्कर तेज़ दार ।
चमकान मन्ज़ दासन त् लो ॥
रास् अथवास प्रकचार ।
विकास नोन भासन त् लो ॥ रु० ॥

भजन न० ४९

वैकुन्ठ द्वार बिन्द्राबन त लो लो ।
श्यामा कार नन्द नन्दन त लो लो ॥
वोन्द इन्दुरव मन फोल नावीत ।
निष्कल मन शशि कल दाम चावीत ।
जीर भम कुय आबि जम जम चावीत ।
नाद बिन्द योग निद्रायि सावीत ।
प्राबीत थान सिद्ध आसन त लो लो ॥ श्या० ॥
देव देवी सारी असे आये ।
वरि योद दात करि सुय सोनय पाये ।
मायि वोलमुत रासुक छुक अभि प्राये ।
नाल रटहोन बाल पान क्या छु परवाये ।
रूप गोपियन हुन्द छु धारण त लो लो ॥ श्या०
वनकी कुल जान्वार ब्यथि आबशार ।
वछि गाव शुर्य पोषि अम्भार ।
कृष्ण बालान वसनस लोल अशि दार
तन्मय ध्यान प्रोचित तद् आकार ।
श्याम सुन्दर मुरली बजावन त लो लो ॥ श्या०

कर्म फल दात धर्मुक नोन सु अवतार ।
सारादि सार द्वारिकाथि हुन्द सु सरदार ।
हंस नादथ कंसुन काल शाहमार ।
बालु गोपाल सुन्दर गिरिवर धार ।
भार .जगतुक वारु कामनतु लो लो ॥ श० ॥
गोपाल सुय गोकल कुय गुलबहार ।
मोल्य ह्यम हन छिम कति मोखत तु ह्यार ।
सीनु मुचरित वनहस विलु तय .जार ।
नीलै नागस .जागहस प्यठ हंस द्वार ।
मुक्त गछहव शोभ दर्शन तु लो लो ॥ श०
गूर करहोस लोलि मन्ज़ सुय ललनावोन ।
दूर गरहोस जिगरस मन्ज सावोन ।
.चूरि प्रेमुक दोध गलि गलि चावोन ।
मन वाज़ि प्यठ सुय नाव खनु नावोन ।
रोज़ि अर्मान स्वर्ग हूरन त लो लो ॥ श० ॥
आदन बाजि प्रारान वादु सोन सूर ।
.जगतकि राजि लोल नार गवना सूर ।
योगियन हन्द वाजदार मो ह्यम दूर ।
अन्द्र निबरै सु प्रकाश भास पूरि पूर ।

थनि .चूर मानि मन मोह्नन त लो लो ॥श०॥
तिथि सम्वाद पाताल ब्ययि आकाश ।
भरन् आमृति हेरि ज्ञोन् शब्द प्रकाश ।
सु प्रकाशय ननि नोन चित्तआकाश ।
सु अनुभव गम्य तेलान शान्त प्रकाश ।
सास भास्कर .जन नोन प्रजलन त लो लो ॥श०

भजन न० ५०

नन्द नन्दन गोमै, बिन्द्राबन गिन्दाने ।
नन्द नन्दन गोमै, बिन्द्राबन गिन्दाने ॥
मधुसूदन गोमै वध राक्षसन कराने ।
सिद्ध साधन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने ॥ न० ॥
स्यूत गापियन गोमै हीत हीत प्रीत भागाने
गीत गोन्दन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने ॥ न० ॥
नन्दन वन गोमै देवन न्याय अन्दाने ।

आनन्द गण गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥
गूरि बालकन गोमै न्यूर दूर गाव रछाने ।
ह्यत गोवर्धन गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥
काम धेनन गोमै श्याम सुन्दर पालने ।
पांम थवने गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥
तन नावनि गोमै वनफलमूल चटाने ।
लूट ह्यत मन गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥
सूर्य जोतन गोमै वीर्यवान पान हावने ।
मोख फोलवुन गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥
पगि पूर्ण गोमै ग्रायि दूरन छु माराने ।
मायि मोहन गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥
आरवलन गोमै खार जिगरस छु थावने ।
नाग न्यंगलन गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥
स्वर गायन गोमै स्वर असुरन छु मोहने ।
मन व्यमरा गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने । न० ॥
गूरि बायन गोमै चूरि दोध थन्य छु ख्यवाने
न्यूर गावन गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥ ।
वृषबानुन गोमै वरि राधायि वराने ।
वर करान गोमै बिन्द्रावन गिन्दाने ॥ न० ॥

मोखत वचने गोमै पोखत कोर तीछि लोनने ।
भक्ति रछग गेमै बिन्द्राबन गिन्दाने ॥ न० ॥
रास खेलनि गोमै सास भास्कर छु फोलाने ।
निर्वासन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने ॥ न० ॥

भजन न० ५१

श्याम सुन्दर दर्शन दिमिना ।
हा ऊधव वन तो ब्ययि यियिना ॥
ज्ञानुक ताज शेरि दित सु महाराज ।
युधिष्ठर नोन नेरि जगतुक ताज ।
पालनस कर्म वेद त्रयियिना ॥ हा० ॥
अर्जुन ज्ञानुक अस्त्र ह्यत ।
दुर्जनन गालवुन ब्रोन्ठ तै पत ।
गीतायि निर्णयि ब्ययि यियिना ॥ हा० ॥
मोह मद कंसासुर काम क्रोध ।
पूतना वासना गछि नाबूद ।

मुकलाव्नि बोज देवकी यियिना ॥ हा० ॥
वृच गोपी वछि गाव पालनस ।
रंग रंग राछरुन ब्योल गालनस ।
आर्त्यन कासनि भय यियिना ॥ हा० ।
पन पहारि द्वारिका बनि तात्क्षण ।
गोरि युस नागस बनि गुल्शन ।
बाल् यार सुधामै ब्ययि यियिना ॥ हा० ॥
थम् मन्ज़् अवतार नरसिहं रूप ।
दागित राछसन युच् गव कूप ।
प्रह्लादनि माल्नयि यियिना ॥ हा० ॥
अवायि अहल्यायि पाप गछि दूर ।
अहंकार रावणस लंकायि सूर ।
रुम रुम गास रमायियिना ॥ हा० ।
नार् पान ज़ालव मटि छुस मार ।
अमार तुम मन्दि अमि छि बेमार ।
मार् मोन मोन वार् लयि यियिना ॥ हा० ॥
लोलि मन्ज़ुबाग सुय ललनावोन ।
चूरि थावोन क्रांसि कर हावोन ।
वांस सूर तमि सन्ज़ि प्रियि यियिना ॥ हा० ॥

वार स्वर कोन् आव यीच् क्या छि वार ।
फिर फिर काज़ि तमि हजि गयि क्रार ।
गोम क्या गास लोस् लयि यियिना ॥ हा० ॥
मित्रस नेत्रन मन्ज़ वथगोस ।
कोंग् काफूर् मुष्क तन नावोस ।
अर्यनि रंग गोमुत छु हियि यियिना ॥ हा० ।
बुध रूप् बुध देव शुद्ध सत् चित्त् ।
बुज़नावि जगतस फेरि करि हित ।
साग् रूप पान गार्गी यियिना ॥ हा० ॥
ज़ाल पञ्जर् जानावार चलन ।
कालि मा बोलन तोत् कलन ।
अद कर हर्द ज़र्दी यियिना ॥ हा० ।
सतची भूतराच कासवुन व्याध ।
प्रन देश बासि नोंन धर्म सम्वाद ।
पथ रछनि सती द्रुपदी यियिना ॥ हा० ॥
भव भर् अज्ञान् क्रूपनय कोर ।
बन्द कोर गजेन्द्रस लोग शशधर ।
हरी हर वरदा भय यियिना ॥ हा० ॥
तस दिन निशि दिन छु केंह भास ।

मच़् गामच़् लोल् हच़् उदास ।
आमि ज़ामि प्याल ख्यनि च्यनि यियिना ॥ हा० ॥
वेस् वोत मेलनुक खेलव रास ।
अथ वास् वरि कूरि सोनय पास ।
भास्कर् वन्त् आश्चर्य यियिना ॥ हा० ॥

भजन न० ५२

दोह दरि गोम तूर्य् पत् लारय ।
आरबल् नत मारय पान ॥
द्वारिकायि छुक किन् मथुराये ।
वति बथरय पान पादन ।
नेत्रन छ्रयम अशि ने थारय ॥ आ० ॥
मोनि वन्दहय वन्धन कास्तम ।
वोन्दि श्रा तम अन्दनम न्याय ।
नन्द नन्दन इत् दुबारय ॥ आ० ।
साल् इखना नाल्य पारावय ।

भक्ति मोखत माल, नाल्य कन दूर ।
काल्य काल मारि अद लोकचारय ॥ आ० ॥
.जमि हन्दि राज महाराजय ।
आदन थाजे बोज़ फ़र्याद ।
योगियन हन्दि ताजदारय ॥ आ० ॥
लोल वाणी नादा लायै ।
पोषनूल .जन ग्यवि कृष्ण गीत ।
साज़ सन्तूर राग सेतारै ॥ आ० ॥
मान अवमान् निशि रूद न्यारय ।
ध्यान चाने रुंग तिमव तन मन ।
घर भाग गोख वैकुन्ठ द्वारय ॥ आ० ॥
हिशि रस्ति ईश धार अवतारय ।
निशि भास कास वोन्य अज्ञान ।
ऋषि क्रेशान डेशहोन वारय ॥ आ० ॥
मन्ज़ पारकन वन्य दिनि नेरय ।
.जूनि छान्डत मन्ज तारकन ।
सास भास्कर तेज़ धारय ॥ आ० ॥

भजन न० ७२

चित्त विकास रास अथवास् प्रेम् वाद् ।
लोल् बन्सरी नादा राधा कृष्ण परयो ॥
शान्त तेज़ आकार नाद बिन्द ओंकार ।
साधनायिअर्ध नादा राधा कृष्ण परयो ॥
कंसुन संहार हंस निर्विकार ।
संसार् कास् व्याधा राधा कृष्ण परयो ॥
राज. योग् अनहत वाजि सुहंस ।
गू गू कुकिल नादा राधाकृष्ण परयो ।
होषि कृष्ण कृष्ण गीत वन् वन्य् दिमयो ॥
जोषि पोषि नूल सस्वादा राधाकृष्ण परयो ॥
वथरोस नेत्रन मन्ज मथुराये ।
प्रेम् पापि अह्लादा राधाकृष्ण परयो ॥
स्वर्गचि अक्रूरच वोछू नचनस गयि मच्. ।
यावनस ह्योतख् दादा राधाकृष्ण परयो ॥
गोपियन सन्मोख सु सरूप हर पोख ।
सु मोख् प्रसादा राधाकृष्ण परयो ॥
नठ छि शाह परनै धार करि कुस मान ।

अनभव गुण वादा राधाकृष्ण परयो ॥
क्षेषान ऋषि नित्य डेशिहोन ननि नोन ।
गोपियन छु धन्य वादा राधाकृष्ण परयो ॥
पर त पान मशिरित तम पत भर लोल ।
कालि गछि वातु अदा राधाकृष्ण परयो ॥
शाम् प्रभात् मेल खेल श्वास वास ओश्वास् ।
भास्कर निर्बाधा राधाकृष्ण परयो ॥

भजन न० ५४

दर्शन दियि यियिनाये ।
करसन् सोन कृष्ण गाये ॥
निर्णय नयिनुय छाये ।
करसन् सोन कृष्ण गाये ॥
नेत्रन अन्दर वथरावोस ।
सीन् मुचरिथ कीन् भावोस ।
लोलि ललवोन लोल् माये ॥ कर० ॥

यी वन्तु थनि .चूरसय।
प्रारान छि तिम ह्यत गुरसय ।
थनि लोट ह्यत गूरिबाये ॥ कर० ॥
वथगेस वतन हियि अम्भरय ।
लयि लोस तस क्या छु गम भरय ।
प्रियवनि परोस तोताये ॥ कर० ॥
पशुगयि गोकल वन्य दिमोस ।
जमुनायि बल साँरी समास ।
पान आलवोस मालाये ॥ कर० ॥
निन्द्रि ह.चन लूटित सु गव ।
विन्द्राबन वोन्य वन रटव ।
नालु मति रटोन पालनाये ॥ कर० ॥
ऊधव च़ वन्तस कोनु आव ।
क्रति रूद व्यापक तस छु नाव ।
भक्तयन हन्ज़ि रचाये ॥ कर० ॥
सनुवुन मनस बन्सरी नाद ।
वनु वोन .चेतस पोवथस याद ।
निन्द्रि हचु. छिन्दरन आपे ॥ कर० ॥
गन्धर्व देवता सिद्ध साध ।

नारद त व्यास ब्ययि प्रह्लाद ।
प्रारान छि प्यठ जमुनाये ॥ कर० ॥
ग्वाल् बाल् वछि गाव ह्यत ।
प्रारान छि सारी प्रच़ प्यत ।
गोपी ज़ल भरनि द्राये ॥ कर० ॥
डेश्नय ग्रोद मा कृष्णय ।
ऋष राग रछ् वुठ फेशनय ।
त्रेश्वि ह्यच़ मरण मा माये ॥ कर० ॥
ह्यम् होष मशरीत पर त पान ।
तम्बुलेमच़ प्रच़ पेवान ।
वन वन वुन्य दिनि द्राये ॥ कर० ॥
सम्वाद बूज़िथ ज़िर् भम ।
अज़पा ज़प सोहं हं ।
ओं भूर् भुवः धारणाये ॥ कर० ॥
अथ वास करिथ भासि नोन ।
वसुदेव रास तति खेलवुन ।
सास भास्कर शोभनाये ॥ कर० ॥

भजन न० ४५

मुनि मन्ज़ ललवथ कन्या लालो ।
भय हर बाल़ गोपालो वे ॥
गोपियन स्यूतिन म्नागन छालो ।
दुख हगो भक्ति रच्छपालो वे ।
ज़न्म् घट् क्रास्तम कंसनि कालो ॥ भ० ॥
भय् मन्ज़ कडतम दय श्री अकालो ।
रच्छपाल् हा कृपालो वे ।
प्रेम् मस भरि मैं ममकी प्यालो ॥ भ० ॥
दूर्यम चोनय कोताह व चालो
वलन् आस ज़न्म् ज़ाला वे
ज्ञान दुकारि बनि सथ परकालो ॥ भ० ॥
खटतम पत् पान रटतम नालो ।
आसतम चय नाली नालो वे ।
लूसुस प्रार् वोन्य कोताह कालो ॥ भ० ॥
हारान वुछथस अशिने चालो ।
लालो छ्यथति गयम बालो वे ।
बालि गोम बाल तै किहो सम्भालो ॥ भ० ॥

दोह आम मोगन छुन्य गयम वालो ।
पलि कोंह पोतुम न मालो वे ।
अथ् छिम छ्यन तै छयस वे हालो ॥ भ० ॥
यलि वनि संयोग आमि कुस कालो ।
द्वी गोज़िन: कुनि कालो वे ।
गुरु शब्द इमयो पत नन्द लालो ॥ भ० ॥
नै छुक आकाशि नै पातालो ।
नै छुक जंगलन त वालो वे ।
वनि छुकन इन्सान आसोथ नाली नालो ॥ भ० ॥
मन सर कुय वन गज़् मुरांग ।
भक्ति सुन्द छुय चे सालो वे ।
रछ तम संकट यमि कलि कालो ॥ भ० ॥

भजन नं० ५६

गोपाल गोकलो । वोल् रास आस गिन्द्गानी ॥
मोहन हा चलो ।
का छून नव छिनगानी ।

आवुण तोत क्रल्योव ॥ वो० ॥
निर्भय निष्कलो ।
कलि कल छम म्य घनानी ।
कलि वुजि शशिकलो ॥ वो० ॥
शांकल वांकलो ।
लोल हांकल न छ्यनानी ।
भोम्बरनि ग्रांगलो ॥ वो० ॥
इन्दु रव मन फोलो ।
गोविन्द गीत गुन्ढानी ।
बन्धन मोकलो ॥ वोल० ॥
ग्वाल बाल खेलो ।
वछि गाव ह्यत प्रागनी ।
जसोदायि मायि वोलो ॥ वोल० ॥
आयि ज़िगरस करतलो ।
मटि मार मा छुय खसानी ।
कर त्राविथ छुस बरतलो ॥ बोल० ॥
थनि चूर डांम्बलो ।
पन छ्यन गोख तन कोन आख ।
मोनि लोस वोन्य वोलो ॥ वोल० ॥

श्याम क्रामकि कोमलो ।
रुम रुम राम छु रमानी ।
मोखत केश केश रम्बलो ॥ बोल० ॥
दूयर् सूर मलो ।
दोरि दोरि फेरवानी ।
सन्नु गोम यिनु चानि वलो ॥ बोल० ॥
वथरै मन मञ्जुलो ।
व्यास नारद छि तोतानी ।
सास भास्कर प्रज़लो ॥ बोल० ॥

भजन न० ५७

वेरि तमि सन्जि़ शेरि प्राण सन्धोरुम ।
ध्यान हैं धोरुम कृष्ण ध्यान हैं धोरुम ॥
नाजनीन पानस सिंगार पोरुम ।
परम आकाश म्योन माल्युन ।
मोह घटि सु प्रकाशघटि गाश होरुम ॥ ध्यान०
सुबह शाम प्रभात नोन म्य विचोरुम ।

रुम रुम .चोरुम ख़ोरुम पन ।
ओं परनोवुम मोह मद पोरुम ॥ ध्यान० ॥
.जीर भम तारि नाद बिन्द स्वर ख़ोरुम ।
दशनाद मुरली वाद प्रकट्याव ।
राधा कृष्ण कृष्ण वाद उश्चोरुम ॥ ध्यान० ॥
दर्द नयि आश .चालि .चालि होरुम ।
सत परदः .चठि्थ्य दूर वनवान ।
अनुग्रह सागर आगर फ्योरुम ॥ ध्यान० ॥
देह अभिमान मोह ग्यव .जन कोरुम ।
अहंकार जोलुम रत्न द्वीप ।
ोड मानसरवर हम् हंस धोरुम ॥ ध्यान० ॥
सतचे अथवाम रास खेल नोवुम ।
साम भास्कर खास भास वनि आप ।
अथवाम त्रिकाम होश त्रिस्तोरुम ॥ ध्यान० ॥

भजन नं० ५८

अरे कनया तू वस्त्र दे हमारे ।
श्री श्यामा प्रभू प्रीतम प्यारे ॥

चिद आनन्दा सदा श्री गोविन्दा ।
मकुन्दा बाल कृष्णा नाद बिन्दा ।
नित्यानन्दा जगत कारण मुरारे ॥ श्री० ॥
हुआ अर्पण तेरे चरणों में तन मन ।
जगत में कुछ नहीं देखता हूं तुझ बिन ।
कुटम्ब घर बारबति सारे के सारे॥ श्री० ॥
वृत्ति जैसी सती स्थिति पत्ति बिन ।
रती भर है नहीं गति प्रतिक्षण ।
सुमत उन्मत तेरे दर्शन भिखारे। श्री० ॥
शरीर और प्राण इन्द्रिय जो तन्मय ।
बहिर अन्तर निरन्तर साक्षी चिन्मय ।
नहीं तुझ बिन कोई दर्शन भिखोर ॥ श्री० ॥
ऋष्यन अर्मान क्रेपाण ढेशहोन जात ।
छि वुठ फेशान आशव दिन त ब्यथि रात ।

छि तोषान गोपी रोषान द्राये ॥ श्री० ॥
जगत बीज शान्त तेरा है विस्तार ।
त्रिकोटि भास्कर खास दीप्ति आकार ।
अग्न बिजली सुर्य चन्द्रम तारे ॥ श्री० ॥

भजन न० ५६

स्वर साम सुब़ शाम श्याम रूपसय ।
लागोस दस्त़ दस्त़ पम्पोश ॥
नाद लोय राधायि बाल़ कृष्णासतै ।
यऩ ़चय छ्यन गोख तन कोऩ आख ।
प्रारान सूर गोम बाल़ पानस तै ॥ लागो० ।
जीर भम सुय नाद खोश अशंसतै ।
फ़र्शंसान ़चरा चर लोल भरऩ आव ।
सुय लोल भागरन आव ़जगतस तै ॥ ला० ॥
ग्रख दि ़च लोलन तथ कुनिरस तै ।
कोंह मन्ज़़ क्याह्ताम गौ नमूदार ।

रंग रंग फ़ोलिथ आव सु पूर्ण बरजस तै ॥ ला०
अग्नस तु पवनस गग्न मंडलस तै ।
भूतरात आवशार पशु त जान्वार ।
राधा कृष्ण कृष्ण अज़पा .जपस तै ॥ ला० ॥
लोल आलव द्यूतुन ऊधवस तै ।
हाऊधव गछ़ टूकुन व्रज मंडलस ।
तिहन्दि प्रेम कुस गोमुत मस्तान मस्तै ॥ ला० ॥
भक्ति तिहन्ज़ वाच़ आकाशस तै ।
तमि लोलु शोलान नभ त भूतरात ।
बोलान कृष्ण कृष्ण शिव गाशस तै ॥ ला० ।
ति बूजित ऊधव वोत मन्ज गोकलस तै ।
वृछ़ि त गाव गोपी रूस्य जान्वार ।
बुल त गुल्ज़ार निशि आय तस तै ॥ ला० ॥
.चरा .चर दह दिशायि सांपनित मस्तै ।
शून्य मन्ज़ बोलान बिन हुक नाद ।
पर त पान मशिरिथ .जपान कृष्णसतै ॥ ला० ॥
मोर .चातक पोषिनूल नच़नस मस्तै ।
कोह त वन व्ययि नदीह्यथ सबजार ।
अजपा सुय बोल कुकिलु नादस तै ॥ ला० ॥

यि डीशित ऊत्रव गौ मन्ज ध्यानस तै ।
यांगु ज्ञान ध्यान् मठुस तति लय गौ ।
शुन्य गोसनिनु:श्राव वनि क्याह्कस तै । ला० ।
सुय रास चुगास लख एक रस तै ।
सास भास्कर नति नोनचमकान ।
हावसु लमि बति तथ जागस तै ॥ ला० ॥

भजन ६०

अष्ट भोज नारायण कष्ठ करसु दूर ।
छु नथ रुनि मन्जलिस करथ गूर गूर ॥
ध्रुव सन्दि पाठिन दितम वरदानु ।
शुक देवनि पाठ्य प्रावु निर्वाण ।
शक्ति पात अनुग्रह करुम पूरि पूर ॥ छु० ॥
ऋद्धि सिद्ध प्रावु सम्पदा ।
रोग शोक कास भास लान सर्वदा ।
भोग योग संयोग दितम पूरि पूर ॥ छु० ॥
सत् वहरि प्युठ चचयि पत पत द्रास ।

अत: गत्, जनम, मरनुच हान कास।
मत ना [illegible] [illegible] छम [illegible] दूर ॥०॥
वार् खुम नु गेरु फेर् मार्कान ।
[illegible] मॅज़ गुजमच बं काच्जून ।
चउ सथ परवु छ्नु दुसतूर ॥०॥
सुत् कुनं मस चाव हटस् के आगुरु ।
[illegible] लागि गाग्र सागुरस तान्य ।
हटस सान तुमि मस् बनु मरवगूर ॥०॥
प्रेम मसु रवअस्य भूरिम बर्बुक आस ।
पास कर पनन्यन टाठ्यन हुंद ।
द्रिय चांन्य छम हा वूसि गोम सूर ॥०॥
लोलुचि रगि सग, फेरि हेरि बुन ।
दर्दुचि दगि पय फेरि क्षण, क्षणु ।
तमि स्रेह रेह छु: दज़ान कोहि नूर ॥०॥
पोशकार चाथु होश दिम गोश श्राव ।
कुज़्य छानि फिरु फिरु हलि गुदसकजर
सुनि लोसु गुन्य मुष्ठ हटम दूर दूर ॥०॥
अथवासु रछुम चोन दामन ।

[illegible] "[illegible]" [illegible] मुद्र अँधकार

गत छिम पथ रछुम नत मल ...॥०॥

भजन ६१

परातपर परम शिवी। जय दीवी शीवी।
निर्द्वंदी ब्यँदी। जय जगथ आनन्दी।
नाद ब्यँद मध्य स्यँधी ॥०॥
पथ रछतम नरतम। सथ भाव सथ सथ करतम।
प्रेम आनँद बरतम ॥०॥
तीज़मय आकार, सुय। बीज़मय ॐकार सुय।
शरण तथ आधार सुय ॥०॥
सुर असुर न्यथ छि सुरनस। कारण गथ करनस।
गन्धर्व वीद परनस ॥०॥
अष्ट सिधी नव निधी। बास इष्टदाली कष्टकास।
दुष्ट नष्टकर सपष्ट भास ॥०॥
ऐं बीज़ कूल्ही बाज़ी। शाँत ऐकान्त तीज़ी।
श्रीं शक्ति निबीज़ी ॥०॥
पूरब प्रकाश ऊदय। दशम द्वार मध्य ऊदय।
इंदु र,व बूनि एकमय ॥०॥
... बनि उतपथ। प्रसाद चानि बानवथ।
शुद शिव बनि प्राप्त ॥०॥
धर्म, अर्थ, मूक्ष कामय। छि तुय मूक परम धामय।

पूरनस कुः न्यथकामय ॥०॥
बालक वथ भाषा। बोज़तम छम आशा।
मूह गटि हाव गाशा ॥०॥
चांन्यी दया ज़ीवन। त्वय कारण छि सीवन॥
मनुवाँछित दीवन ॥०॥
सास भासकर छि प्रज़लान, चिथ विमर्ष दीप्तमान
हर्ष गण न्यथ निर्वान ॥०॥

भजनछर

बाह र,व गाह चोन माह पैकरियै॥
नाज़ुच थुर शाह सौंदरिये ॥०॥
नाज़नीन पानस साज़ कमि करिये।
नाज़ुल जादूगरिये ॥०॥
भ्रमरावि अम्यि चअन्य सेहर सामुरियै॥०॥
रुमि गोड़ श्रुन्यि दार चूनि झरिझरिये।
शिनि मन्ज़ बोलान बिनाहुक नाद।
परिसुत्य ज़ुर्य गयि अनुपर्य पर्यै॥०॥
आसमान बुछख्य सौन्य कोतुरै।
कमि बाज़ारिय न्यबुथ र,ज़।
शाह पर लूसिम मान, क्रूर करियै॥०॥

हूरन सूर गव चानि हूरदैयै ।
नूरु, बर्य बयैं तिम, छि बनवान ।
आस्मान रछ्यछ रोज़ु स्वर्गुन परिदै ॥०॥
मूरु मूरु फुज्य,खम मुशक ऑबरियै ।
रम, मस, दूर्य चान्य बयैं कून्य ।
दूर चान्य दोह त राथ कुन्य अकारियै ॥०
कमि आलि द्रायख हा रँग कारियै ।
पोरयय, कुकिलव गु०यँद गू ।
सोनु हार्य परवु चानि मरु०तु मारि मारियै ॥०
रुमु २ ज़ुलफुक्यचिमु, वाल बरियै ।
दूल्वालु दानु बाम्बयैं लो ।
ज़ालु लग्य राज़ु हंसस प्यठ शशदरियै ॥०॥
अम्बर हाराण नेरख पम्ब सरियै ।
रँबु, वोन्य कमि गम्बरियैं लो ।
बुँबुँरुन गोस मा गोय च्य लोलरियै ॥०॥
शुराह सिंगार चान्य पूर ज़रियै ।
गूरितै कून्य ज़रगरियै लो ।
कक़कर दसवान, सोन गोड़ क़रियै ॥०॥
आगरः प्यठ चिय दागु बबरियै ।

नांगिरायिन समन बरियै लो।
खुशीस मच ज़ाग बअन्य च़ नागरियै॥०॥
प्याल चाह माला माल बरि बयैं।
साकिथ्य पुण न आकुपरोज़ी ग्राव।
भासकरः सास भास न्यबर अँदरियै॥०॥

भजन ६३

ज़गथ बीज़ चक्र शोडशाडल। रमाण न्यथ चक्र पीठसतल
नमान कारण प्रान मँगल। उमा दीवी क्षमा वतसल
मँगल दा सर्वमँगली॥०॥

प्रामोय पालन त थविलादन। क्षमा कर सान्यन अपरादन।
च़ कण दार बार, फरियादन। अबल़ बुल बालुनुय नादन।
तुवय त्राविथ छि लर बरवल॥०॥

सनातन धर्मुचिय रछ लाज। नवन पीडन कुनुय सामराज।
च़, स्यध कर पान छख सरताज। छि त्रनुवय लूक च्य मोहताज।
महाराज आदिराज श्रीफल॥०॥

च़, ऋण रूग भय शूक दूर कर। प्रनुन अनुग्रह च़ भरपूर कर
च़, क्रूध काम वैरियन सूर कर। च़ सूग यूग ज्ञाण मंज़ूर कर
च़, समयूग, सम्पदा दिज़, अटल॥०॥

तुहि माता पिता दाता । तुहि भ्राता ज़गथ्य माता ।
तुहि भक्तयन ति वरदाता । तुहि दुष्टन सदा घाथा ।
चु नून्य भास कास सर्व ग्रहबल ॥०॥
यि माया मूह करतम चु दूर । चल्यम अज्ञान फौल्यम पुष्पनूर
गलन कास कूध दुर्ज़न चूर । पनञ अनुग्रह चु कर भरपूर ।
तवय दिन राथ छम चान्य कल ॥०॥
फौल्यम अद हृदयि कुय कमल । चल्यम अज्ञाणुचिय ग्राँगला ।
वुज्यम काम क्रूध मूह जँगल । वुज़्यम शीखर कला शशिकल ।
वज़ान नाद व्यँद तार निश्चल ॥०॥
भद्रकाली वाजाली नेर । स्तुच तलवार ह्यथ वार फेर ।
छु कर फुरसथ म कर वोन्य चेर । अन्याय छठ छाय कास अँधेर
चु, भास सास भासकर निर्मल ॥०॥

भजन ६४

ज़गथ बीज़ तीज़ परि पूरण । कुरिथ छख व्याप्त चुयहेरि बे
नमामि चरणु कमलन दोन । क्षमा कर ही उमा दीवी ॥०॥
परात पर पर अपर व्यसतार । छु चाने आसुन, बासान सार ।
दयाये चानि बिन दुस्तार ॥०॥
ऋणन शूकन भूयन रूगन । क्षणन मँज़ छस करान मूचन

दिवान भूगन तू ब्ययि युगन ॥०॥

कटाक्षा युद् गछ़ख कुरिथुय। दयाये चानि गछ़ तरिथुय।

नेत्र छिस लील अशि भुरिथुय ॥०॥

पणुन प्रण करतु वोन्य चुय याद। दिवान शुर्यलोल हुत्य छिय नाद

च्य शेछ़ कुस बोज़ि सोन फरियाद ॥०॥

करान सृष्टि थरथ तू ब्ययि समहार। त्रिकारण पानु छख

आधार। छु चाने अज्ञाया अनुसार ॥०॥

तुहि माता पिता भ्राता। गुरू बँधू तू ब्ययि दाता।

शुर्यन कुस असि च्य ब्यन माता ॥०॥

बरस तल अस्य गँडिथ छिय कर। अबल बालक छि

त्राविथ लर। छ मा आश काँसि हुँज़ चुय वर ॥०॥

च्य दिम ज़्यव गीत गयवय चानी। नृत्य ह्यकि क्याह

वोनिथ वाणी। करान वीद चोर त्वता चानी ॥०॥

चु पानय पानु छख ज़ानान। पनुन महिमा कुस करिमान

ब्रह्मादिक दीव छि तति ब्यसरान ॥०॥

यि माया मुह म्य करतम दूर। चलान अँधकार फ्वलान

आसि नूर। बुन्यम साक्षातकार भरपूर ॥०॥

यि गट छ़ठ छाय वोन्य कासतम। प्रत्यक्ष सास भासकर भसतम।

सदा सत्य किन्य प्रसन्न आसतम ॥०॥

भजन ६॥

भक्तानुग्रहकारिणी। शोक त्रलोक धारिनी।
राज्य स्थल रानि क्रारी॥ श्री राज्ञी समाकार॥
चमत्कार कूटि रुवय। च्यथ गगन भाव प्रवय।
अनाहद शिव शिवय। बॅलुबुन छु बुद ॐकार॥०॥
द्वादश अर्क बीज़ आकार मुकट सोलह सिंगार।
हृदि त्रुढि त मास, राहमार। सिंहासनस त सवार॥०॥
च्यथ रूप तीज़ समव्यथ। स्यथ रूप बीज़ असख्यथ।
आनंद सुथॅध व्यकस्यथ। प्रखचार यि चोन सोफार॥०॥
ह्रीं बीज़ क्लीं बीज़ी। सौ बीज़ शाँत तीज़ीं।
राम राज्ञी अबीज़ी। स्वाहा सदा नमसकार॥०॥
भक्तयन रछिथ च्य पथ न्यथ। शक्ती त्रैलोकी असख्यथ।
दुर्गी निवार दुर्गथ। दीर्ग रग बोन्य च निवार॥०॥
पुन्य पाप कर्म लोनुय। रुव लेख छल च प्रोनुय।
मृटि न्याय छुय च्य सोनुय। नोन हाव वोन्य च प्रखचार।
ॐकार वीद गोनुथ। त्रेयि बीद अबीद मोनुथ।
क्याह मान्ये तथ च्य ज़ोनुथ। ज़ाननस कर छु तकरार॥०॥
निश दिन शरण त्रिकारण। शशादर लुगिथ छि प्रारण।
ऋषयष क्रेशुवुन्य व्यचारण। प्रारण छि नेंद्र बेदार॥०॥

काम क्रूध लूभ दुर्ज़ेन। गाल पाल वोन्य च़ु सरज़न।
पर्वथ काल्य छि लरज़न। दीह कुय क्याह छु आधार॥०॥
चानी दया भवानी। ह्यकि क्या वोनिथ यि वाणी।
अँज़राव न्याय सजनी। गुँज़राव छि चान्य शीरखार॥०॥
नाणा रूफ दारिथ। आर्त्ये च़्य सोरी तोरिथ।
वोन्य वार्थ सोन्थ छि आर्त्ये। तार्य क्याह चु धार अवतार ॥०॥
गौरी अगूर दुख कास। गुरु मुख सँमुख बास।
हर सुख छार् वुन दास। सास भासकर चमत्कार॥०॥
॥०॥ श्री राज्ञी क्षमाकार ॥०॥

भजन ६६

लल्‌वान सीरि हक, ज़ेरि २, हेरि बोन, छस वज़ान, ज़ीरःबम तार
हस के भयरवान, मस यलि ब् चोवनस, बोवनम सीरि इसरार॥
आलव लोरय गोख, दोरियाव दाम, चोख, शोकन कुरुख मिलचार
सतक्य आकाश, सतक्य पाताल, लल प्याठ दिथ कुनय ठान॥
गाह गए गाह गाश गाह प्रकाश नूरान यकसान सोरि सामान।
रँग २ बेरँग। सूरथ सुमूरथ न्न्य द्राय दर बाज़ार।
गगनय पवनय लागनय बागनय सथ नय् ब्यरि नवद्वार
सुय हज़ार दासतान बोलान नय, नय मुलुनान ह्यथ खरीदार

पनुनुय ह्युन ध्युन, पनुनुय बाज़ार, पानय ग्राख, व्यियि सौदाग
हरद, सूँत कुनिरस वोतँ कुनि लुबमस न, दर्दनय फेरि शटहज़ार
सश पर्दः चढिशुय हूरः ट्रायि वनुवान पोशान कुरूखतूमार ।
ग्रख लज्य सुदरस दरवाज़ खुलु गुयि अनुग्रह ध्युतुखअम्बार
कँदा पोश्य ज़ूनि डबि गाशि रुव सअविथ नाविथ अँदिरमि हुँदर
गाटि मँज़ भासकर सास बासुनोविथ शिव गाश कीशव सु शाँत
आकार ॥०॥

ERRATTA

Page No:	B.No	LineNo:	MissPrint	Correct
5	3	2	चन्द्र	चन्द्रम
6	4	7	ह्री	ह्रीय
6	4	11	पापनाव	पपनाव
6	4	12	अनहत	अनाहत
8	5	6	ज्यति	ज्योती
8	5	7	कानाव	करनाव
8	6	12	कामुकि	कामुक
8	6	15	नर	निद्र

Page No:	B. No:	Line No:	Miss Print	Correct
9	6	9	ता।	तारा
10	6	1	भामवुन	भासबुन
10	7	8	सान्ध	सान
11	7	5	रुत	रीतु
12	8	5	कैमास	कैलास
12	8	5	वाप	वास
12	8	11	नव	नुव
14	9	2	लिगुन	लियगुन
14	9	2	पुर	पर
14	9	11	हर	हरहर
14	9	17	इष्टदेव	इष्टदेवचयत्देव
15	10	11	मिला	मिलन
15	10	11	हज	हन्ज़
18	11	3	हा	हर
18	11	4	गु-	गुरु
18	12	1	धाणायि	धारणायि
23	14	1	शुन्य	शिन
24	16	6	बोलसुये	सुलसुत्यै
30	17	15	मोरव	मो[illegible]

Page No:	B. No:	Line No:	Miss Print	Correct.
31	18	1	डगंय	गड्य
32	18	15	आसवुन	अ्ग्वुन
33	18	8	मूरि सूरि	मूर मूर
35	18	3	कारथ	कूरिथ
37	20	9	रवज़्द्वारो	राज्द्वारो
37	20	10	आश्चार	आश्चारो
39	20	7	द्पनस	द्वोपनस
39	20	7	गोपी	गोपनि
39	20	11	करित	कर
43	21	10	डत्सव	उत्सव
43	21	14	कलुश	कलश
45	21	1	अन्दु निबर	अँद्र निबर
			पति	पूत्
47	22	1	माम	सास
54	27	13	वषन	वर्षन
55	27	5	मपर्श	सपर्श
56	28	2	मयि	मायि
57	28	6	साहम	सोहम
63	32	5	शलावीत	शह्लावित

Page No:	B. No:	Line No:	Miss Print	Correct
63	32	6	प्रग	प्रँग
65	33	12	प्राशय	प्रारान
66	34	14	कोहुत	कोलाह
70	37	4	बनत	वतन
71	38	13	बाज़गाई	बाज़गौरे
72	39	7	प्रग	प्रँग
72	39	16	कसस	कंसस
73	40	6	प्रारनाये	पैरनाये
73	40	7	यम छनाव	छ्यमनाव
74	40	11	पि	पिल
75	41	1	छयनुन्	यनुछ्यान
75	41	6	कति	कृत्य
75	41	8	अद	अँद
76	41	14	पुरवत	पुखत
77	42	16	स्यूत	सूत्य
78	42	6	छि	छु
79	43	11	बाल	बैल
79	43	11	कालि	कॉलि
82	42	1	भीताथि	सीताय्

Page No:	B. No:	Line No:	Miss Print	Correct
82	44	3	कर्न	कुनि
82	44	3	कौन	कूनि
82	44	11	नग	नँग
87	47	16	स्तातनस	स्तोतुल्नस



समाप्त

निवेदन

इस भास्कर प्रकाश में वह सब कविताएं छापी गई हैं जो हमें इकठे करने में सम्भव हुई हैं, यदि किसी महा पुरुष के पास इन छपी हुई कविताओं के अतिरिक्त और कोई कविता स्वामी जी की हो तो कृपा करके मुझे सूचित करें ताकि वह भी छापी जाऐ। मैं उन सब महा पुरुषों को धन्यवाद देता हूं जिन्हों ने मुझे इन कविताओं के एकत्र करने में सहायता की है।

मैंने पहले पांच सौ कापिया उर्दू में छपवाई थीं परन्तु अब इन और बाकी कविताइयों को हिन्दी लिपी में छपवाया है ताकि महिलायें भी पढ सकें। विशेषता मैं श्री वेद लाल धर भटयार निवासी को धन्यवाद देता हूं जिन्हों ने हिन्दी लिपी में इन कश्मीरी कविताओं को लिखा है॥

हरी कृष्ण कौल

Printed at :-
KRISHNA PRINTING PRESS, KOTHI-BAGH,
Srinagar – Kashmir.
